वर्ष 47 अंक: 5 07.10.2024 सोमवार (सितंबर-अक्टूबर) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00
महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

भागवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

भक्तों का भागवत

रक्षाबंधन

जो हमारी आज्ञा में रहता है, उसे कभी भी दुःख नहीं आता।
जो हमारा विश्वास रखता है, उसकी मैं रक्षा करता हूँ।
उसके पाप मात्र टाल देता हूँ। इस बात में शंका करना नहीं।

— भगवान स्वामिनारायण

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजीभक्तिस्तु सर्वदा ॥

19 अगस्त– रक्षाबंधन के मंगलकारी दिन महापूजा...

प.पू. गुरुजी के 'Sign' वाला रक्षाकवच मुक्तों को प्रदान करतीं प.पू. दीदी...

प्रभु-संत द्वारा चेतना की सुरक्षा का दिव्य बंधन है— रक्षाबंधन!

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार हज़ारों वर्ष पूर्व 'रक्षा सूत्र' बाँधने का प्रचलन शुरु हुआ। प्रायः कहा जाता है कि माता लक्ष्मी ने राजा बलि को सर्वप्रथम 'राखी' बांधी थी। निम्न कथा उसी का उल्लेख करती है और साथ ही अहम् का त्याग करके दीनभाव से प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाती है।

असुरों के राजा बलि ने 100 यज्ञ पूरे करके स्वर्ग पर आधिपत्य करने का प्रयास किया, इससे इंद्र डर गए। वे भगवान विष्णु के पास गए और उनसे रक्षा का निवेदन किया। तब **भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण किया।** वे वामन अवतार में राजा बलि के पास गए और भिक्षा में तीन पग ज़मीन मांगी। अहंकार से युक्त बलि को यह छोटा-सा साधारण कार्य लगा। सो, सहजता से तीन पग ज़मीन देने का वचन दे दिया। उस समय शुक्राचार्य ने उसे रोकने की कोशिश की। दरअसल, शुक्राचार्य जान गए थे कि वामन के रूप में स्वयं भगवान विष्णु हैं। शुक्राचार्य ने राजा बलि को समझाया कि ये छोटा बच्चा नहीं है, ये स्वयं विष्णु हैं, ये तुम्हें ठगने आए हैं। तुम इन्हें दान मत दो। ये बात सुनकर राजा बलि बोले कि अगर ये भगवान हैं और मेरे द्वार पर दान मांगने आए हैं, तो भी मैं इन्हें मना नहीं कर सकता हूँ।

भगवान विष्णु ने तो दो पग में ही पूरी पृथ्वी एवं स्वर्ग नाप लिए। यह देख कर राजा बलि समझ गए कि ये वामन व्यक्ति साधारण नहीं है। अतः तीसरा पग रखने के समय बलि ने अहंकार तज कर विनम्रभाव से अपना शीश ही उनके चरणों के समक्ष रख दिया। राजा बलि पर प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें पाताल लोक में रहने का आदेश दिया और वर मांगने को कहा। राजा बलि ने कहा—हे प्रभु! पहले आप वचन दें कि जो मैं मागूँगा; वह आप प्रदान करेंगे, छल न करेंगे। भगवान विष्णु ने उन्हें वचन दिया। बलि ने वर माँगा—मैं पाताल लोक में तभी रहूँगा, जब आप मेरे नेत्रों के सामने हमेशा प्रत्यक्ष रहेंगे। यह सुनकर भगवान विष्णु दुविधा में पड़ गए। उन्होंने सोचा कि राजा बलि ने तो उन्हें अपना पहरेदार बना लिया। सो, वचनबद्ध भगवान विष्णु पाताल लोक में राजा बलि के यहाँ रहने लगे।

वैकुंठधाम में माता लक्ष्मी भगवान विष्णु की प्रतीक्षा कर रही थीं। काफी समय बीतने के बाद भी नारायण नहीं आए। इसी बीच नारदजी ने लक्ष्मीजी को बताया कि भगवान विष्णु तो अपने दिए वचन के कारण राजा बलि के पहरेदार बने हुए हैं। यह सुन कर लक्ष्मीजी ने नारदजी

से उपाय पूछा, तो उन्होंने कहा कि आप राजा बलि को भाई बना लें और उनसे रक्षा का वचन माँग लें। तब लक्ष्मीजी ने एक गरीब महिला का रूप धारण किया और राजा बलि के पास रोती हुई गईं। राजा बलि ने उनके रोने का कारण पूछा, तो उन्होंने बताया कि उनका कोई भाई नहीं है। यह सुन कर बलि ने उन्हें अपनी धर्म बहन बनाने का प्रस्ताव दिया। फिर अपने महल में रख लिया और बहन की तरह उनकी देखभाल करने लगे।

श्रावण पूर्णिमा के दिन गरीब महिला बनीं लक्ष्मीजी ने राजा बलि की कलाई में एक कच्चा धागा बांध दिया। राजा बलि ने कहा कि आपने बहन के रुप में मेरी कलाई पर यह रक्षासूत्र बांधा है, तो मैं आपको कुछ देना चाहता हूँ, आपकी जो इच्छा हो मांग लीजिए। तब लक्ष्मीजी अपने वास्तविक रूप में आईं और बोलीं कि आपके पास तो साक्षात् भगवान हैं, मुझे वे ही चाहिएँ। मैं उन्हें ही लेने आई हूँ। मैं अपने पति भगवान विष्णु के बिना वैकुंठ में अकेली हूँ। वचन के अनुसार राजा बलि ने भगवान विष्णु को माता लक्ष्मी के साथ जाने दिया। परंतु, जाते समय भगवान विष्णु ने राजा बलि को वरदान दिया कि वह हर साल चार महीने पाताल में ही निवास करेंगे। सो, ऐसा माना जाता है कि **'देवशयनी एकादशी' से 'देवउठी एकादशी' तक चातुर्मास के दिनों में भगवान विष्णु राजा बलि के पास पाताल लोक में जाकर रहते हैं।**

जिस दिन लक्ष्मीजी ने राजा बलि को रक्षा सूत्र बाँधा, उसी दिन से 'रक्षाबंधन' का यह पवित्र त्योहार मनाया जाता है। पूजा दौरान विप्र द्वारा यजमान अथवा बहन द्वारा भाई की कलाई पर 'कलावा' अथवा 'राखी' बांधते समय निम्न श्लोक का उच्चारण किया जाता है—

येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः।।

अर्थात्—जिस रक्षा सूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बांधा गया था, उसी रक्षाबंधन से तुम्हें बांधते हैं, जो तुम्हारी रक्षा करेगा। हे रक्षे ! (रक्षासूत्र) तुम चलायमान न हो, चलायमान न हो।

मानवता का सबसे महत्वपूर्ण आधार प्यार और समर्पण है, जो राखी के दिन भाई-बहन के रिश्ते में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। **हाथ की कलाई पर बांधा जाने वाला रक्षासूत्र मात्र एक धागा नहीं, बल्कि शुभ भावनाओं व शुभ संकल्पों का पुलिंदा है।** रक्षासूत्र के माध्यम से व्यक्ति को धर्म के पथ पर चलने हेतु प्रेरित करके, उस पर अडिग रहने की सीख भी दी जाती है **और... सर्वसामर्थ्यवान गुरु तो अपने शिष्य के, जीव के कल्याण हेतु इसे बांधते हैं।**

प्रभुधारक संतों का ऐसा अनूठा संबंध हम सभी को प्राप्त हुआ है, जो रक्षाबंधन के दिन हमें 'रक्षा कवच' प्रदान करते हैं।

19 अगस्त 2024, सोमवार को प्रति वर्ष की भाँति, **प.पू. गुरुजी** से **श्री ठाकुरजी की प्रसादी का रक्षाकवच** प्राप्त करने हेतु **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने सुबह 9:30 बजे कल्पवृक्ष हॉल में महापूजा आरंभ की। श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति के आस-पास **गुरुहरि काकाजी** के **हस्ताक्षर** की बड़ी राखियों से सुसज्जा की थी तथा प.पू. गुरुजी की मूर्ति के समक्ष विराजमान श्री लड्डू गोपालजी के आगे लकड़ी के आसन पर भी हस्ताक्षर वाली बड़ी राखी लगाई थी। इसी प्रकार प.पू. गुरुजी के सोफे के पीछे **'Happy रक्षाबंधन'** सहित हस्ताक्षर वाली बड़ी राखियाँ अंकित की थीं।

श्रावण मास के कारण **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज** की छोटी मूर्तियाँ हिंडोले पर विराजमान थीं। हरिभक्तों के हाथों से लिखी हुई स्वामिनारायण मंत्रपोथी के पन्नों से बनाए गए फूलों से हिंडोला सजाया था और प्रार्थना लिखी थी— **हे महाराज! हम आपकी सौरभ बनें...**

महापूजा में आरती, थाल एवं मंत्रपुष्पांजलि करके 'धुन' दौरान प.पू. गुरुजी ने नित्य पूजा की। प.पू. गुरुजी की पूजा में भी श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों के पीछे हस्ताक्षर वाली छोटी राखियाँ लगाई थीं और गुलाब की पंखुड़ियों सुशोभित किया था।

प.पू. गुरुजी की आज्ञा से प.पू. आनंदी दीदी और अक्षरज्योति की बहनों की ओर से, **'रक्षाबंधन संदेश'** के साथ महापूजा की **प्रासादिक राखियाँ** प्रति वर्ष विदेश एवं भारत के विभिन्न प्रांतों में रहते सत्संगियों को भेजी जाती हैं। सो, महापूजा संपन्न होने के बाद **पू. राकेशभाई** ने उस संदेश का पठन किया—

राखी
19.8.2024, सोमवार

प्रिय आत्मीय अक्षरबंधुओं...
राखी के पावन पर्व पर अक्षरज्योति से
आपकी बहनों के भावभरे जय स्वामिनारायण!
सरधार गाँव में भगवान स्वामिनारायण ने सद्गुरु मुक्तानंदस्वामी से कहा कि—
जो हमारी आज्ञा में रहता है, उसे कभी भी दुःख नहीं आता...
जो हमारा विश्वास रखता है, उसकी मैं रक्षा करता हूँ।
उसके पाप मात्र टाल देता हूँ। इस बात में शंका करना नहीं।

(बोल्या श्रीहरि रे... पृष्ठ 407)

उपरोक्त वचन द्वारा श्रीहरि ने दृढ़ता से अपने आश्रित को आश्वस्त कर दिया है।
परंतु, कई कितने अनुभव-प्रतीति होने के उपरांत भी
जीवदशा ऐसी है कि प्रसंग पर भगवान और संत के ऐसे आश्वासन याद नहीं आते
और... याद आएँ भी तो विश्वास नहीं होता कि वाक़ई ऐसा ही होगा!
सो, रक्षाबंधन के इस मंगलकारी पर्व पर
सर्वप्रथम तो भगवान व संत से मिले आशीर्वाद का विश्वास करने का बल उन्हीं से मांगे
और
व्यावहारिक या आध्यात्मिक बाधाओं से मुक्त होने
उनकी आज्ञा का सांगोपांग पालन करने का संकल्प करें।
ऐसी प्रार्थना के साथ इस पत्र के साथ भेजा महापूजा की प्रसादी का
रक्षाकवच बांध कर आप सुरक्षित रहो-धन्य हों...

अक्षरज्योति से आपकी ही बहनों की ओर से—
आनंदी-स्मिता-स्वाति के रक्षाबंधन निमित्त जय स्वामिनारायण!

साथ ही साथ **प.पू. गुरुजी** ने इसका निरूपण करते हुए निम्न आशीष वर्षा की—

*गुजरात का एक गाँव है—सरधार। वहाँ महाराज ने मुक्तानंदस्वामी से बात की थी, उसका यहाँ ज़िक्र किया है। **महाराज कहते हैं कि आज्ञा में मेरी मूर्ति है।** तो, स्वाभाविक-सहज है कि **जहाँ महाराज की मूर्ति साथ में हो, वहाँ दुःख का लेश भी प्रवेश नहीं कर सकता।** जो इस बात का विश्वास करता है कि आज्ञा में मूर्ति होने के कारण हमारी रक्षा होती है, उसे कभी भी दुःख नहीं आता। **हमें कभी भी दुःख न झेलना पड़े, इसलिए महाराज की दी हुई शिक्षापत्री, वचनामृत या महाराज के प्रगट संतों के वचनों से मिली हुई आज्ञा का हमेशा पालन करना...***

***भगवान के भक्तों के प्रति अरुचि, अभाव, द्रोह, टीका-चर्चा, उनके विरुद्ध किसी के कान भरना—इसे काकाजी सबसे बड़ा पाप कहते थे।** बाकी सब क्षम्य (क्षमा) है, लेकिन इसे महाराज क्षम्य नहीं करते, भुगतना ही पड़ता है। महाराज ने हमें चेतावनी दी है कि ये नहीं करना, वर्ना पाप के भागीदार बन जाओगे। पाप का टोकरा तुम्हारे सिर पर आ जाएगा, इस बात में तनिक भी शंका नहीं करना।*

महाराज ने आश्वस्त किया है कि आज्ञा में रहेंगे, तो कैसा भी दुःख होगा, तो वे रक्षा करेंगे। कोई भी आसरा न हो, वहाँ से महाराज ने हमें चमत्कारिक रूप से उबारा है। हमने अपने जीवन में

कई बार अनुभव भी किया है, लेकिन जीव दशा ऐसी है कि प्रसंग पर हमें भगवान और संत के आश्वासन याद नहीं आते, हम वे भूल जाते हैं या मन शंका करने लग जाते हैं कि भई कहाँ तक भगवान हमारी रक्षा करते रहेंगे? हम तो ग़लती पर ग़लती करते ही रहते हैं। भगवान के लिए दूसरे भी तो भक्त हैं, सिर्फ मेरे पीछे ही अपना समय कहाँ निकालेंगे? यूँ मन कई प्रकार से दुःख में डूबा रहता है। यदि प्रसंग पर भगवान और संत के आश्वासन याद भी आते हैं, तो हमें विश्वास नहीं होता कि सच में ऐसा होगा! हम जितनी भी गलतियाँ करेंगे, महाराज सच में रक्षा करेंगे? ***महाराज और भक्तों का संबंध तो माँ और पुत्र जैसा है।*** *माँ कितना भी लड़के को डाँटे, उससे रूठी हुई भी हो। पर, उसे लगे कि कहाँ तक इसे मार खाने दें। सो, किसी भी तरह बुलाकर, थपथपा कर, समझा कर उसे अपनी शरण-गोद में बिठा लेती है।*

रक्षाबंधन को मंगलकारी पर्व बताया है कि हमारे जीवन में हमेशा जगत-संसार में, हमारा जीवन सुखमय, मंगलमय हो। *हमारा मन जो डगमगा कर सोचता रहता है कि भगवान हमारी रक्षा करेंगे या नहीं, कहाँ तक करते रहेंगे? इसमें से बाहर निकल कर, भगवान का भरोसा रखने का एक बल हमें मिल जाए, इसलिए प्रार्थना भी प्रभु से ही करें।* ***मानवस्वरूप में जो प्रभु विराजमान हैं, उनसे ही प्रार्थना किया करें–***

हे काकाजी! हे पप्पाजी! हे स्वामीजी! हमें बल देना कि ***हम मौके पर आपका भरोसा रख पाएँ।*** *साथ ही दुःख में से मुक्त होने का भी बल मांगें। जिसके लिए उन्होंने एक रास्ता बता दिया कि हमें छोटी-मोटी जो भी व्यावहारिक या आध्यात्मिक आज्ञा की हो उसका ऊपर-ऊपर से नहीं, बल्कि with full capacity and detail, top to bottom पालन करें। ऐसा नहीं कि ये नहीं करूँगा, तो चलेगा। जैसे महाराज ने कहा हुआ है कि पानी भी छान कर लेना। मंदिरों में नल के ऊपर थैली बांधी हुई होती थीं। ऐसी छोटी-सी बात को सावधानी से पकड़ कर हमें महाराज की आज्ञा का पालन करना है। संकल्प-प्रतिज्ञा करें कि हर एक चीज़ में महाराज की आज्ञा है, ऐसा पहले सोच कर फिर ही आगे बढ़ें। आज बड़े संत, बड़ी बहनें रक्षा कवच की राखी बाँधेंगे, उससे हमेशा सुरक्षित रहें और अपना जीवन धन्य करें...*

अक्षरज्योति की बहनों ने resin art से प.पू. गुरुजी के लिए राखी बनाई थी। इसमें एक फूल के साथ **गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी** के अस्थि पुष्प समाविष्ट किए थे। प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के बाद, श्री ठाकुरजी से प.पू. गुरुजी की दीर्घायु एवं निरामय स्वास्थ्य की प्रार्थना करते हुए **सेवक पू. अभिषेक** ने यह राखी प.पू. गुरुजी को अर्पण की, **पू. विजयपाल सिंहजी** ने

अपनी पत्नी **पू. शशि यादवजी** एवं **पू. बलराम गुप्ताजी** ने अपनी पत्नी **पू. रेखा गुप्ताजी** की ओर से उनके **दिव्य भाई प.पू. गुरुजी** को राखी बाँधी।

भक्तों को रक्षाबंधन की अनोखी स्मृति देने के लिए **पू. आशीष शाह** ने **गुरुहरि काकाजी महाराज** एवं **प.पू. गुरुजी** के हस्ताक्षर वाली राखी **पू. कल्पेशभाई ठक्कर** के सहयोग से राजकोट से ख़ास बनवाई थी। सो, सबको रक्षाकवच प्रदान करते हुए प.पू. गुरुजी ने संतों, युवकों तथा हरिभक्तों को गुरुहरि काकाजी के हस्ताक्षर वाली और प.पू. दीदी-बहनों ने भाइयों व भाभियों को प.पू. गुरुजी के हस्ताक्षर वाली राखी बाँधी। भजनों की गूंज से कल्पवृक्ष हॉल दिव्यता से भरपूर था। पंक्तिबद्ध होकर राखी बंधवाने के बाद प्रसाद लेकर सब तृप्त हुए। करीब दोपहर ढाई बजे तक मुक्त आते रहे और जो इस समय नहीं आ पाए, वे सायं 7 बजे आरती का दर्शन एवं राखी बंधवाने के लिए आए।

इस प्रकार राखी का पवित्र त्योहार संपन्न हुआ। परंतु, उसके बाद ही जन्माष्टमी की तैयारियों में सब जुट गए। **प.पू. गुरुजी की इच्छा-आज्ञा से कई वर्षों से जन्माष्टमी दर्शन करने आते मुक्तों को माखन-मिश्री का प्रसाद वितरित किया जाता है।** सो, 24 अगस्त को कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र होकर सेवकों-हरिभक्तों, बहनों-भाभियों ने **पू. प्रमीतभाई संघवी** द्वारा बनवा कर भेजी गई प्लास्टिक की करीब 8000 मटकियों में माखन-मिश्री भर कर प्रसाद तैयार किया।

25 अगस्त, रविवार की सायं **प.पू. दीदी** Hip replacement surgery के लिए अपोलो अस्पताल में दाख़िल होने गईं। **26 अगस्त जन्माष्टमी** की सुबह 8:00 से 12:00 के बीच **पू. डॉ. कैलाश सिंहजी** की पहचान से संपर्क में आए **पू. डॉ. यतिन्द्र खरबंदाजी** ने प.पू. दीदी का ऑपरेशन किया।

मंदिर को रोशनी से सजाया था और कल्पवृक्ष हॉल में प्रति वर्ष की भाँति **भगवान श्री कृष्ण की सुंदर झांकियाँ लगाई थीं।** सायं 5:30 बजे से दर्शन हेतु भक्तों का ऐसा तांता लगा कि बीच में तो मंदिर के प्रवेश द्वार से लेकर **'तीन फरवरी पार्क'** तक लंबी कतार लगी थी। रात 12:00 बजे आरती होने तक करीब 5000 हरिभक्त माखन-मिश्री का प्रसाद लेकर गये और आरती के उपरांत भी **पू. सुहृदस्वामीजी** द्वारा बनाई पंजीरी-फल का विशिष्ट प्रसाद लेकर भक्तों ने प्रस्थान किया। आरती के दौरान **भगवान श्री कृष्ण** की वेशभूषा पहन कर, **पू. संबंध मल्होत्रा** ने उनके बाल स्वरूप का अनुभव करा कर भक्ति अदा की। अचानक उसे इस रूप में देख कर **प.पू. गुरुजी** अत्यंत प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद दिया...

26 अगस्त 2024, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव...

जन्माष्टमी की पूर्व तैयारियाँ

सर्वधर्मान्परित्यज्य
मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

- भगवद्गीता 18.66

श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं की मनोहर झाँकियाँ...

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
हे नाथ नारायण वासुदेवा...
पितु मात स्वामी सखा हमारे
हे नाथ नारायण वासुदेवा...

27 से 29 अगस्त, श्रीकृष्ण की झाँकियों का दर्शन करने आए 'महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल' (अशोक विहार) के करीब 700 बच्चों को आनंद कराते हुए संस्कारों का सिंचन एवं प्रसाद वितरण...

जलझूलनी एकादशी के अवसर पर प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य पर्व

प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि तो फाल्गुन शुक्ल-1 है; परंतु Gregorian Calendar के मुताबिक़ **13 मार्च** है, School Certificate में **13 जून** लिखी है और वर्षों पहले सहज ही बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने बताया था कि **गुरुहरि काकाजी महाराज** ने एक बार **13 दिसंबर** को उन्हें गुलाब का पुष्प देते हुए कहा था—***आज से तुम्हारा नया जन्म!***

तब प.पू. गुरुजी से अनन्यभाव से जुड़े मुक्तों ने विचार किया कि अवनि पर प.पू. गुरुजी के मंगल प्राकट्य का पूरे वर्ष स्मरण करते हुए क्यों ना उनके प्राकट्य पर्व त्रैमासिक मनाए जाएँ! अतः **13 सिंतबर (प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज का प्राकट्य दिन) को भी प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्वों की श्रेणि में समाविष्ट करके मुक्तों ने मनाना आरंभ कर दिया।**

इस वर्ष भी 13 सिंतबर को यह पर्व मनाने के लिए सभी एकत्र होने वाले थे, लेकिन सोने पर सुहागा कि **12 सितंबर** को **प.पू. गुरुजी की निश्रा में भगवान भजते पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी** को **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** के वरद् हस्तों से **भागवती दीक्षा** प्राप्त किये **25 वर्ष** पूरे हो रहे थे। अतः **14 सितंबर, शनिवार—जलझूलनी एकादशी** के मंगलकारी दिन **प.पू. गुरुजी के त्रैमासिक प्राकट्य पर्व** के साथ यह भी मनाने का तय किया गया।

भाद्रपद माह में शुक्ल एकादशी को पद्मा एकादशी अथवा जलझूलनी एकादशी नाम से जाना जाता है... इस विशेष एकादशी से जुड़ी निम्न कई मान्यताएँ हैं—

1. भगवान विष्णु जो कि चातुर्मास के दौरान योग निद्रा में होते हैं, वे शयन के दौरान करवट बदलते हैं, इसलिए इसे **'परिवर्तिनी एकादशी'** भी कहते हैं। इस दिन भगवान विष्णु के वामन अवतार की पूजा की जाती है। जो भक्त इस दिन व्रत-पूजन करते हैं, उन्हें ब्रह्मा, विष्णु सहित तीनों लोकों में पूजन का फल प्राप्त होता है। स्वर्ग के देवी-देवता भी इस एकादशी का व्रत रखते हैं।
2. श्रीकृष्ण जन्म के अठारहवें दिन माता यशोदा ने उनके वस्त्र धोये थे, जल पूजन (घाट पूजन) किया था। इसलिए इसे 'जलझूलनी एकादशी' या 'डोल ग्यारस' के रूप में मनाया जाता है। जलवा (कुँआ) पूजन के बाद ही संस्कारों की शुरुआत होती है। कहीं इसे सूरज पूजा, तो कहीं दश्टोन पूजा भी कहा जाता है। इस अवसर पर कृष्ण मंदिरों में पूजा-अर्चना होती

है। भगवान कृष्ण की मूर्ति को एक डोल में विराजमान कर उन्हें नगर भ्रमण कराया जाता है।

3. भगवान श्री कृष्ण ने आज के दिन गोपियों के साथ यमुना में नौका विहार किया था और दान के रूप में उनसे दही माँगा था। इसलिए श्री ठाकुरजी की मूर्ति को नौका में विराजमान करके जल में विहार कराने की प्रथा जारी है।

4. गुजराती भाषा में इसे **जलझीलनी एकादशी** कहते हैं और स्वामिनारायण संप्रदाय में भी इसका बहुत महत्त्व है। भगवान स्वामिनारायण ने अपने संतों-भक्तों के साथ गढडा की **घेला नदी**, अमदावाद की **साबरमती नदी** जैसे कई स्थलों में अपने समय में जलक्रीड़ा की थी। जिसका वर्णन संतों ने अपने भजनों-पदों में भी किया है—

   ઘેલાં નદીનાં રે, નિર્મળ નીર વખાણી; સંત હરિજનને રે, સાથે લઈ ઘનશ્યામ.
   ન્હાવા પધારે રે, ઘેલે પૂરણ કામ; બહુ જળક્રીડા રે, કરતા જળમાં ન્હાય.
   (घेलां नदीनां रे, निर्मळ नीर वखाणी; संत हरिजनने रे, साथे लई घनश्याम।
   न्हावा पधारे रे, घेले पूरण काम; बहु जळक्रीड़ा रे, करता जळमां न्हाय...)

   आज भी स्वामिनारायण संप्रदाय के मंदिरों में श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति को नाव में बिठा कर, संत-भक्त जल में विहार कराते हैं। **इसके द्वारा एक संदेश मिलता है कि भगवान और संतरूपी ज़हाज़ हमारे पास हो, तो उसमें बैठ कर हम निर्विघ्न भवसागर से पार उतर सकते हैं। अतः भगवान व संत का आश्रय सदैव पकड़े रखना चाहिए।**

   दूसरी बात—**भगवान स्वामिनारायण ने गढडा प्रथम प्रकरण के तीसरे वचनामृत में कहा है—**

   हम जो-जो उत्सव-पर्व मनाते हैं, उन्हें याद रखना और अंतकाल में यदि उसका स्मरण हो जाए, तो जीव का बहुत ही भला होता है। जो मेरे दर्शन का स्मरण करता है, उसे मैं स्वयं लेने के लिए आता हूँ और अपने अक्षरधाम का सुख प्रदान करता हूँ।

ऐसी दिव्य स्मृतियों को संजोए रखने हेतु कई सालों से मंदिर के संत-सेवक यह आयोजन करते आएँ हैं। अबकी बार भी **14 सितंबर** की सुबह **पू. मैत्रीशीलस्वामी** के साथ संतों-सेवकों ने कल्पवृक्ष हॉल के बीचोंबीच जल से भरे छोटे कुंड के मध्य में **श्री नीलकंठ वर्णी** की मूर्ति और सुसज्जित नाव में **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज** एवं **गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ** विराजित की

थी। मोटर के माध्यम से यह नौका श्री नीलकंठ वर्णी के चारों ओर घूम रही थी। **प.पू. गुरुजी** की **नित्य पूजा** को भी छोटे जलाशय के रूप में सुशोभित किया था।

सायं 7:30 बजे प.पू. गुरुजी के त्रैमासिक प्राकट्य दिन एवं पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी के रजत भागवती दीक्षा दिन हेतु सभी कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी के आसन के समक्ष प्रतीक रूप बड़ी नौका का सुशोभन किया था। पृष्ठभूमि पर दरिया का दृश्य बना कर श्री ठाकुरजी की मूर्ति अंकित की थी और पवई के गुजराती भजन की निम्न पंक्ति से प्रार्थना की थी—

आपीए शुं आपनाराने अमे... आ दिल अने श्वासो विना शुं अम कने...

अर्थात्— हमें सब कुछ देने वाले प्यारे प्रभु को हम अपने दिल और सांसों के अतिरिक्त क्या अर्पण कर सकते हैं...

धुन-भजन से भक्त वृंद ने सभा आरंभ की। भजन के उपरांत पू. राकेशभाई ने रजत दीक्षा दिन निमित्त पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी से प्रार्थना की कि वे प.पू. गुरुजी के साथ रखे सोफे पर बैठे। तब **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी सहजता से प.पू. गुरुजी के निकट गए और उन्हें अपनी भावना व्यक्त करने के बाद, उनकी आज्ञा से पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी को आग्रहपूर्वक उस सोफे पर बिठाया और स्वयं कुर्सी पर बैठ कर अपने स्वामीसेवकभाव का दर्शन कराया।** सभा में सेवक **पू. विश्वास, पू. पुनीत मल्होत्रा** एवं **पू. सरयूविहारीस्वामी** ने माहात्म्यगान करते हुए **प.पू. गुरुजी** से त्रैमासिक प्राकट्य पर्व निमित्त प्रार्थना की। साथ ही, **1 सितंबर 2024** को सेवक **पू. अभिषेक** को **'संत सेवक दीक्षा'** लिए **25 वर्ष** पूरे हुए, तो **प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार 'मंदिर के राजहंस'** की सेवा-समर्पण को भी नमन किया तथा **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी** के निम्न कई गुणों-सेवाओं की झांकी कराई—

- **अक्षरस्वामी यानि— दिल्ली मंदिर की नींव के साधु!**
- उन्होंने गुरुजी से आज तक जो कुछ सीखा-शिक्षा ली, वो छोटों को सिखाने के लिए तत्पर रहते हैं। ताकि गुरुजी को परिश्रम न करना पड़े।
- उन्होंने अपने स्वभाव में खूब बदलाव किया और अपने वर्तन से सिखा रहे हैं कि प्रसंग बनने पर किसी पर excite नहीं होना चाहिए।
- वे discipline के हिमायती इसलिए हैं कि वह गुरुजी को पसंद है।

- गुरुजी ने सुहृदस्वामीजी-अक्षरस्वामीजी को ऐसा तैयार कर दिया है कि उनके सेवन से गुरुजी के अनुसार वर्तन करना सीख सकते हैं।
- समूह में रहते हुए कैसे जीवन जीना, वो इनसे सीखने को मिलता है।
- उन्हें सब टेक्निकल साधु कहते हैं। वे अपना बुद्धियोग गुरुजी की रूचि अनुसार सत्संग की सेवा के लिए उपयोग करते हैं। जिससे सत्संग समाज को बहुत लाभ मिलता है।
- संकल्पस्वामीजी के अक्षरवास होने के बाद सुहृदस्वामीजी को उनकी कमी महसूस होती थी, लेकिन अक्षरस्वरूपस्वामी ने अपने आपको ऐसा ढाल लिया कि आज वे सुहृदस्वामीजी का दाहिना हाथ बन कर साथ दे रहे हैं।
- मंदिर में प्रसाद बनाने के लिए किन-किन उपकरणों से सुहृदस्वामीजी अच्छी तरह और जल्दी सेवा कर सकते हैं, इस हेतु वैसे उपकरण खोज कर लाते हैं।
- संक्रांति भिक्षा का पूरे सप्ताह का कार्यक्रम होता है। उसके लिए सेवकों के साथ मिल कर पहले से उसकी सूची बनाते हैं।
- जन्माष्टमी के लिए मक्खन-मिश्री की मटकियों का प्रसाद तैयार किया जाता है, तो पहले मटकियों का arrange करके-साफ़ करवा कर तैयार कराते हैं। इसी प्रकार, अन्नकूट का प्रसाद भरने के लिए करीब दो हज़ार डिब्बे पहले बनवा कर रखते हैं। प्रसाद भरे जाने के बाद समय से उन्हें वितरित करवाते हैं।
- प्रसाद लेने के बाद भक्त अपने बर्तन धोकर जाते हैं। कई बार बर्तनों में चिकनाहट रह जाती है, तो वे सेवकों के साथ दोबारा उन्हें धोकर, पोंछ कर इस भावना से रखवाते हैं कि **भक्तों को चिकनी थाली में प्रसाद नहीं देना है।**
- वर्तमान समय में Internet युग के साथ चलते हुए, अपने बुद्धिकौशल से मंदिर की **APP, Website, YouTube Channel develop करवाया। फलस्वरूप आज घर बैठ कर भक्तों को सत्संग सभा का लाभ मिलता है।**
- **कोविड की बीमारी** के समय मंदिर में सबसे पहले अक्षरस्वामी ने समय की नज़ाकत को समझ कर, सबके साथ मिल कर अनिवार्य कदम उठाए।
- **7 मार्च 2009** को **'अक्षरतीर्थ'** पर स्वरूपों के स्वास्थ्य हेतु अखंड परिक्रमा की शुरुआत कराई। गुरुजी के कहे अनुसार माया से पार के इस विचार द्वारा गुणातीत स्वरूपों के प्रति भक्ति अदा करने का एक मार्ग बताया।

- छुट्टियों में रहने आते बच्चों को जीवन जीने की कला सिखाते हैं, ताकि उनके माँ-बाप को नाज़ हो कि उनके बच्चे सही दिशा में अग्रसर हो रहे हैं।
- **युवा समाज के लिए गुरुजी ने एक ऐसा पात्र तैयार कर दिया है, जो उन्हें गुरुजी से जोड़ेगा।** सत्संग की बारीकियों को वे सिखाएँगे।
- उनका जीवन प्रेरणादायी है कि **जिस रास्ते पर चलें, फिर उससे पीछे नहीं मुड़ना, याहोम हो जाना है।**

मुक्तों द्वारा महिमागान के पश्चात् **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** ने नया भजन– **'हम प्रभु ओर चलें, उसकी राह तकते हैं...'** प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् कार्ड के रूप में पू. अक्षरस्वरूपस्वामी के प्रति मुक्तों ने जो अपनी भावना व्यक्त की थी, उसे पू. राकेशभाई ने पढ़ा और फिर **पू. अक्षरस्वरूपस्वामी** ने विनम्रभाव व भावुक हृदय से आशीष याचना करते हुए कहा–

*...मेरा सौभाग्य है कि गुरुजी के त्रैमासिक प्राकट्य पर्व के साथ मेरी भागवती दीक्षा की रजत जयंती मना रहे हैं, लेकिन भले लिखा न हो या बोला न गया हो, पर **यह उत्सव अभिषेकभाई के लिए भी है, क्योंकि उन्हें भी दीक्षा लिए 25 साल हुए।** मैंने जब पार्षद दीक्षा ली, तब गुरुजी के पास सेवक नहीं था और 16-17 साल की उम्र में अभिषेकभाई ने 1 सिंतबर को दीक्षा ली... उसकी माता ने बहुत support किया। मेरे भी घरवालों ने साधु बनने के लिए मना नहीं किया... उनकी आँखों में आँसू थे, लेकिन एक ही बात कही कि **कभी पीछे मुड़ कर मत देखना। मतलब इस रास्ते चले हो, तो इसे छोड़ना नहीं...** मैं अपनी किसी भी क़ाबिलियत के कारण साधु नहीं बना, सिर्फ और सिर्फ गुरुजी के संकल्प से और आज भी उन्हीं की बदौलत हूँ। मेरा मुझमें कुछ नहीं है। बस यही प्रार्थना है कि **अपेक्षारहित साधु बनूँ, किसी से कोई अपेक्षा न रहे...** गुरुजी से प्रार्थना है कि वे हमें अपने आशीर्वाद और आनंद का रस पिलाते रहें। **इस साल हमारे सुहृदस्वामीजी का 60वाँ जन्मदिन है... उन्होंने गुरुजी के दिल में जो ठंडक करी है-साथ दिया है, वह बेजोड़ है। गुरुजी कई बार कहते हैं कि अगर सुहृदस्वामी से पूछ कर करोगे, तो मुझे पूछने की ज़रूरत नहीं है। गुरुजी की इस बात का विश्वास करते हुए सुहृदस्वामी की महिमा समझें और 12 अक्तूबर दशहरे के दिन यह उत्सव हम सब मिल कर मनाएँ...***

तदोपरांत **प.पू. गुरुजी** के लिए **पू. नित्या दीदी** द्वारा रचित कविता पढ़ कर **पू. राकेशभाई** ने सबकी भावना व्यक्त की और... इस मंगल अवसर पर **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्दान दिया–

....आशीर्वाद तो स्वयं महाराज ने हम पर इतने बरसाये हैं। श्लोक की पंक्ति का गौर करें तो

कि अखंड बहती गंगा में हमें स्नान करने का मौका दे रखा है। आज से नहीं, महाराज प्रगट हुए तब से आज तक और आगे भी वो चलता ही रहेगा। तो, उस कृतज्ञता को हम बरक़रार रखें और ***इस समाज में अपने आपको न्यून समझें*** *कि सामने आया हुआ ब्रह्म की मूर्ति यानि ब्रह्मस्वरूप संत हैं, अक्षरस्वरूप हैं, गुणातीत स्वरूप हैं, साक्षात् गुणातीतानंदस्वामी इनके द्वारा दर्शन दे रहे हैं—इस भावना से इनके साथ हम व्यवहार-वर्तन करेंगे, तो ये भावना साकार होने में देर नहीं लगेगी। कुछ और करना नहीं है, सामने आये हुए मुक्त को ब्रह्म की मूर्ति मानकर, गुणातीतानंदस्वामी, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, संतभगवंत साहेब का स्वरूप मानें कि* ***मेरे सामने ये साहेब आये हैं, मेरे सामने ये स्वामीजी आये हैं, मेरे सामने ये काकाजी खड़े हैं, मेरे सामने ये पप्पाजी खड़े हैं। यूं मानकर हर एक के साथ व्यवहार करें और इस गुणातीत समाज के अंदर रसबस हो जाएँ।*** *ऐसी प्रेरणा, बल, बुद्धि महाराज आज के दिन हम सबको बक्शें, यही प्रार्थना...*

तत्पश्चात् **पू. अक्षरस्वरूपस्वामी** एवं **पू. अभिषेक** ने छोटी-छोटी नावों का प्रतीकात्मक हार **प.पू. गुरुजी** को अर्पण किया और महत्व बताते हुए **पू. राकेशभाई** ने सभी की ओर से निम्न प्रार्थना की—

मान्यताओं के अनुसार चातुर्मास दौरान भगवान विष्णु राजा बलि के यहाँ शयन करते हैं। भाद्रपद शुक्ल एकादशी यानि जलझूलनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु एक ओर करवट लेते हैं, जिसे 'परिवर्तन' कहा जाता है। तो, जैसे प्रभु ने करवट लेकर एक परिवर्तन किया; उसी प्रकार ***आपके बल से हम हमारे स्वभावों में परिवर्तन लाएँ और आपकी मूर्ति रूपी नाव में बैठ कर सहजता से भवसागर तर जाएँ...***

प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का हार पू. अक्षरस्वरूपस्वामी एवं पू. अभिषेक को पहना कर प्रसन्नता व्यक्त की। तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने **रजत पुष्प, पू. सुहृदस्वामीजी** ने प.पू. गुरुजी के साथ पू. अक्षरस्वरूपस्वामी की **रजत फोटो फ्रेम** एवं मंदिर के **सभी संतों** ने प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद सहित पू. अक्षरस्वरूपस्वामी के **गुणानुवाद** की फ्रेम पू. अक्षरस्वरूपस्वामी को दी। मोगा के **पू. विकास वर्माजी** के सुपुत्र **पू. हेमंत** का जन्मदिन था, सो प.पू. गुरुजी ने उसे भी एक स्मृति भेंट दी। आज के इस दिव्य वातावरण में अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए कुछ मुक्तों ने आनंदोब्रह्म करके सभा का समापन किया और फिर प्रसाद लेकर सबने प्रस्थान किया...

14 सितंबर 2024, जलझीलनी एकादशी पर विशिष्ट दर्शन

त्रैमासिक प्राकट्य पर्व निमित्त प.पू. गुरुजी को हार अर्पण

पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी की भागवती दीक्षा की रजत जयंती की दिव्य स्मृतियाँ

इस समाज में अपने आपको न्यून समझें कि सामने आया हुआ मुक्त
ब्रह्म की मूर्ति यानि ब्रह्मस्वरूप संत है, अक्षरस्वरूप है, गुणातीत स्वरूप है...

-प.पू. गुरुजी

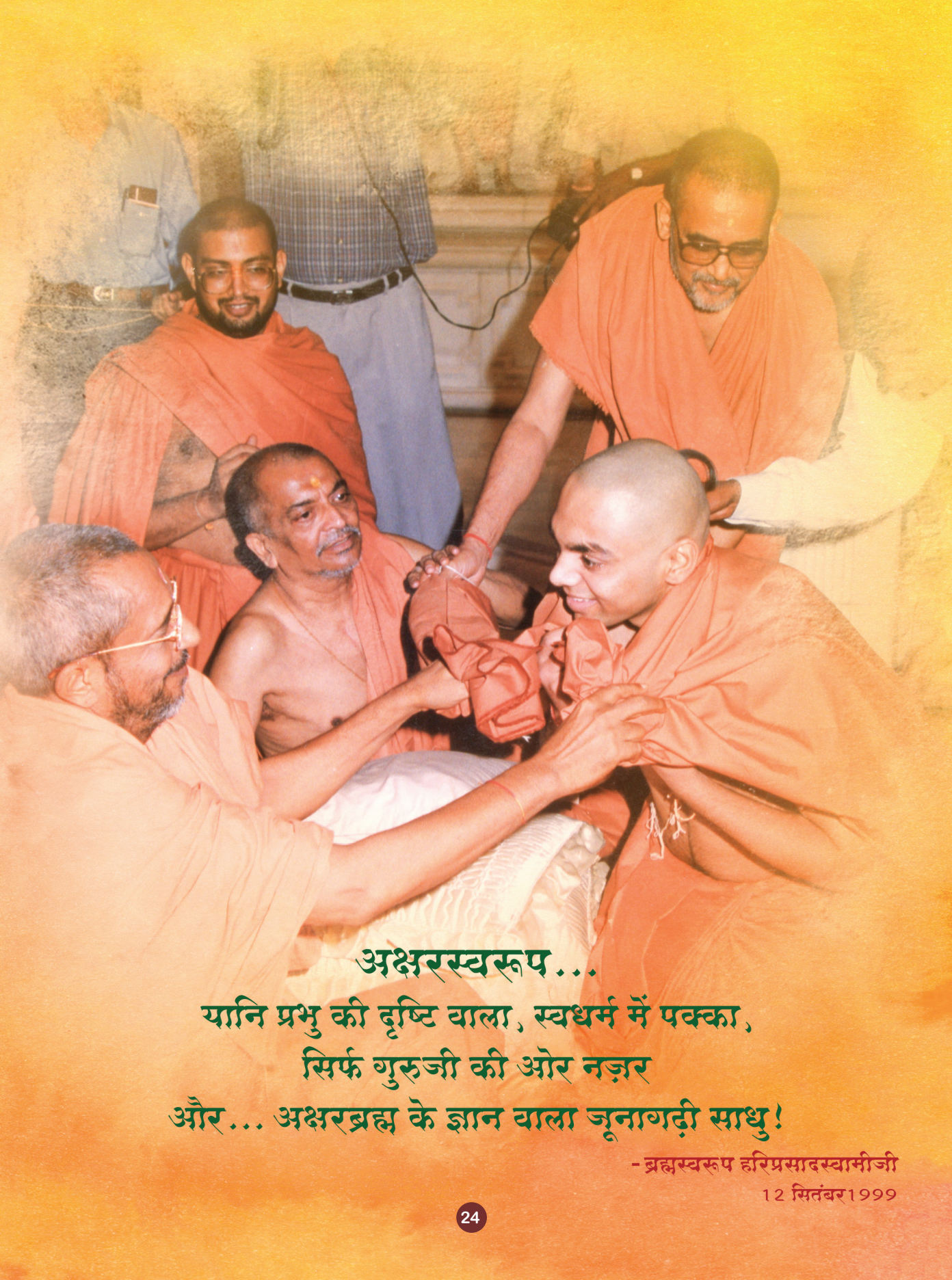

अक्षररूप...
यानि प्रभु की दृष्टि वाला, स्वधर्म में पक्का,
सिर्फ गुरुजी की ओर नज़र
और... अक्षरब्रह्म के ज्ञान वाला जूनागढ़ी साधु!

- ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी
12 सितंबर 1999

भक्तों के श्रेय हेतु परम पूज्य गुरुजी का सहसा पंजाब विचरण...

सावन-भादों मास में हुई बरसात से दिल्ली के वातावरण को गर्मी से थोड़ी राहत मिली, तो संतों-सेवकों ने सोचा कि बहुत समय से प.पू. गुरुजी मंदिर से बाहर नहीं गए हैं, तो उन्हें स्थानीय विचरण के लिए ले जाया जाए। मंदिर से पौने घंटे की दूरी पर हरियाणा-कुंडली की Tulip Grand Society में कुछ हरिभक्त रहते हैं। यहीं रहते निष्ठावान **पू. कीर्तिभाई जानी-पू. शोभना भाभी** के सुपुत्र **पू. प्रणव जानी** का **जन्मदिन 18 सितंबर** को होता है। सो, पू. प्रणव के जन्मदिन निमित्त इस दिन उनके घर **प.पू. गुरुजी** की पधरावनी का कार्यक्रम बनाया गया। करीब 40 मुक्तों को साथ लेकर प.पू. गुरुजी उनके घर पहुँचे। गुणातीत स्वरूप अकसर कहते हैं कि सच्चे संत की हर एक क्रिया ब्रह्मनियंत्रित होती है। अतः गुरुहरि काकाजीमय प.पू. गुरुजी ने कुंडली जाते हुए रास्ते में ही मुक्तों के साथ गाड़ी में तय कर लिया कि वे यहाँ से पानीपत और फिर पंजाब-मोगा जाएँगे। पू. कीर्तिभाई जानी के घर में प्रवेश करने के बाद तो उन्होंने रट लगा ली कि जल्दी से खाना कर पानीपत के लिए रवाना होना है। दो-तीन घंटे यहाँ ठहर कर, प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ **पू. पुनीत गोयलजी** के घर पानीपत पहुँच गए। इधर मंदिर में सेवक पू. अभिषेक और Tulip से वापिस आई बहनें पंजाब के लिए packing करके, कुछ मुक्तों के साथ शाम को 6:00 बजे निकल कर रात को करीब 8:30 बजे पानीपत पहुँच गईं। सभी प्रसाद लेकर रात को **पू. पुनीतजी** एवं **पू. नवनीतजी** के घर ठहरे।

19 सितबंर की सुबह नाश्ता करके पंजाब के लिए रवाना हुए। रास्ते में कुरुक्षेत्र आने पर **गुरुहरि काकाजी** के प्रासादिक स्थल **'ब्रह्मसरोवर'** गए। वर्षों पहले **गुरुहरि काकाजी** के साथ प.पू. गुरुजी यहाँ आए थे। तब जल हाथ में लेकर, गुरुहरि काकाजी ने उन्हें संकल्प कराया था— ***हमें मन का आभास भी नहीं रखना...***

इसकी स्मृति करते हुए **पू. स्वाति दीदी** ने सभी की ओर से सेवक द्वारा **प.पू गुरुजी** को प्रार्थना की— **'हे गुरुजी, आज हम सब आपके साथ यहाँ आए हैं। जैसे काकाजी ने आपको यहाँ संकल्प करवाया था, वैसा संकल्प आप हमें करवाएँ ताकि हम सबको भी मन का आभास न रहे...'**

तब **प.पू. गुरुजी** ने इसी जन्म में सबको ब्रह्मस्वरूप बनाने का संकल्प करते हुए निम्न आशीर्वचन कहे—

હે મહારાજ, હે સ્વામી, હે કાકાજી મહારાજ, હે પપ્પાજી મહારાજ, હે સ્વામીજી મહારાજ, હે સાહેબ!
આપ બધાં જ ગુણાતીત સ્વરૂપો અને સંતો આશીર્વાદ આપજો કે અમો આ જન્મમાં જ છતી દેહે,
બ્રહ્મભાવને પામી આપના સાધર્મ્યને કેળવી બ્રહ્મસ્વરૂપ થઈ જઈએ...

(हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी महाराज, हे पप्पाजी महाराज, हे स्वामीजी महाराज, हे साहेब! आप सभी गुणातीत स्वरूप एवं संत आशीर्वाद देना कि हम जीतेजी इसी जन्म में ब्रह्मभाव एवं आपके साधर्म्य को प्राप्त करके ब्रह्मस्वरूप हो जाएँ...)

कुरुक्षेत्र की प्रासादिक भूमि पर सबको आशीष देने के उपरांत दोपहर को हल्दीराम रेस्तरां में भोजन करके लुधियाना पहुँचे। वहाँ **पू. दर्शनसिंह भट्टीजी** ने सबको कुल्फी खिलाई। लुधियाना के भक्तों का भाव ग्रहण करके, मोगा जाते हुए रास्ते में प.पू. गुरुजी जब जगरांव पहुँचे, तो Highway पर जगरांव कुछ भक्त काजू का प्रसाद लेकर दर्शन करने आए थे। रात को तकरीबन 11:30 बजे **पू. आशीष अग्रवालजी** के घर मोगा पहुँचे। यहाँ प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर गए।

20 सितबंर की सुबह नित्यकर्म के बाद प.पू. गुरुजी ने पूजा की। तब मोगा और उसके आस-पास के कई भक्त दर्शन करने आए। शाम 7:30 से पू. आशिष अग्रवालजी के घर धुन व भजन से पू. ऋषभ नरूला, सेवक पू. विश्वास एवं सेवक पू. नक्षत्र ने सत्संग सभा आरंभ की। सभा में निम्न भक्तों ने प.पू. गुरुजी के साथ के अपने अनुभवों का लाभ दिया—

पू. भीखूभाई झोंसा (दिल्ली)

*भारत एक ऋषि-कृषि प्रधान देश है। पंजाब में गुरुओं की बहुत महिमा है। साधु-संत की अपनी कोई निजी ज़िंदगी नहीं होती। यहाँ के लिए **काकाजी महाराज ने जो परिश्रम किया, उसमें उनकी गुरुभक्ति नज़र आती है**...*

प.पू. गुरुजी ने ज़रूर किसी ना किसी का संकल्प पकड़ा होगा, तभी वे इस आयु में इतनी दूर पंजाब आ गए। किसी ना किसी का कल्याण करने आए होंगे।

इस बात की पुष्टि करते हुए **सेवक पू. विश्वास** ने अपना अनुभव बताते हुए कहा—

***गुरुजी** ने कई बार यह बात कही है—जहाँ तक मैं समझा हूँ, तो यदि सेवक-भक्त गुरु के अनुसार चलना शुरू कर देते हैं, तो गुरु का उस जगह पर जाने का मन करता है। शायद इसीलिए गुरुजी ने अचानक पंजाब आने का सुनिश्चित किया...*

पू. पुनीत गोयलजी (पानीपत)

हमारा ज्ञान प्रगट है। मैंने पहले भी शायद यह बात की थी कि उदाहरण के तौर पर सभा में अभी बात करनी है; तो हमें थोड़ा सोचना पड़ता ही है, क्योंकि गुरुजी ने हमें experiences इतने सारे करवाए हैं... पर, अभी जैसे कि गुरुजी अचानक पंजाब आए हैं, तो हम कारण ढूँढने

*लगते हैं कि क्यों और किसके लिए आए होंगे? इसकी बजाय हम गुरुजी और उस भगत पर छोड़ दें, जिसके लिए आए हैं। बस यह सोचें कि इसमें हमारा नंबर लग गया। यह चीज़ हम पकड़े रखें और **श्रीजी महाराज** के इस बार की **राखी** के आशीर्वाद याद रखें—*

'जो हमारा विश्वास रखता है उसकी मैं रक्षा करूंगा। उसके पाप मात्र टाल दूंगा इस बात में कोई शंका नहीं...'

पू. पवन शर्माजी (मोगा)

***गुरुजी** यहाँ आए हैं, तो ज़रूर किसी के घर की खटास लेने आए होंगे। हम सभी का बहुत सौभाग्य है कि गुरुजी पंजाब पधारे। मैं याद करता हूँ कि 2010 में भी गुरुजी ने ऐसा gesture किया था। वे पानीपत से अचानक पंजाब आए थे और तब उन्होंने मेरे मन की खटास निकाली थी और विश्वास को चुना था। तब गुरुजी ने कहा था—मेरा एक कैलंडर तेरे पास है। वो कैलंडर यानि मेरा बेटा विश्वास... **यदि विश्वास मेरे पास रहता, तो वो पत्थर का पत्थर ही रहता। गुरुजी ने उसे ऐसा तराशा कि वो हीरा बन गया!** जब गुरुजी ऐसे अचानक आते हैं, तो किसी ना किसी का कल्याण करने आते हैं। यदि गुरुजी के अनुसार चलेंगे, तो हमें कोई नुकसान नहीं होने वाला है।*

अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया—

*हमारा ये पंजाब आना हुआ, हम तो Tulip में बैठे थे। वहाँ से ही मेरे दिमाग में फितूर आया कि चलो, पंजाब चलें! फिर यह भी सोच आई कि इतनी दूर जा रहे हैं, तो 2-4 दिन का प्रोग्राम बनाएं। Generally मेरा एक बैग तो तैयार रहता है, बाकी सेवकों का भी बैग तैयार करके पानीपत भेज दिया, ऐसे ये प्रोग्राम सेट हुआ। आज हम इस समय यहाँ बैठे हैं। मेरा कहने का मतलब यही है कि जिस तरह ये सब setting हुई है, ऐसे ही **प्रभु ने हमारे जीवन की हर प्रकार से setting पहले से करके रखी होती है। कोई भी प्रसंग या अपने जीवन में घटनाएँ बनें, सुख-दुःख आएँ या अपना सारा काम बिगड़ता भी नज़र आए, लेकिन ये भरोसा रखें कि काकाजी पंजाब के हैं और पंजाब काकाजी का है।** तो, सब चिंताएँ इनके सिर पर रख कर हम बेफ़िक्र होकर काकाजी की मूर्ति और स्वामिनारायण मंत्र—इस प्रकार प्रभु का भजन करते रहें। हमारे सारे काम automatically होते ही रहेंगे। ये अनुभव करके हम दूसरों को भी कहें कि गुणातीत विभूतियों को याद करके स्वामिनारायण मंत्र का जाप करो, तुम्हारे सारे काम अपने आप सुलझ जाएँगे। जब हम दूसरे को कहते हैं, तो ये भरोसा हम सब भी अपने आप में रखें, यही प्रार्थना।*

सभा के पश्चात् दिव्य स्मृतियों में लीन होकर कुछ भक्तों ने आनंदोब्रह्म किया और फिर अपने ठहरने के स्थान पर विश्राम करने गए।

21 सितबंर की सुबह नाश्ते के बाद, प.पू. गुरुजी लुधियाना में **पू. सुखनीतसिंहजी (टिम्मी भैया)** के प्लॉट पर भूमिपूजन करने गए। वहाँ **सेवक अभिषेक** ने मंत्र पुष्पांजलि करके जल छिड़का और बहनों ने पुष्पवृष्टि की। यहाँ से **पू. दर्शनसिंह भट्टीजी** के घर जाकर दोपहर का प्रसाद लिया। फिर, अक्षरज्योति के ऑफिस में रह कर, हमेशा सेवा के लिए तत्पर **पू. कमलकिशोरजी (लवली भैया)** के दामाद **पू. निखिल वडेरा**-बेटी **पू. नेहा** के घर अल्पाहार करके, मोगा में **पू. आशीष अग्रवालजी** के घर लौटे। यहाँ धुन-भजन के बाद, **पू. पुनीत मल्होत्रा** के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सभी ने केक का प्रसाद लिया।

22 सितबंर की सुबह नाश्ते के बाद, प.पू. गुरुजी **पू. विकास-पू. मोनिका वर्माजी** के नए plot का भूमि पूजन करने गए। धुन करके संतों ने मंत्र पुष्पांजलि की और **प.पू. गुरुजी** ने स्वहस्त से नींव की ईंट पर सीमेंट डाल कर चाँदी रखवाई। **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा— ***इस घर को मंदिर की तरह बनवाना।***

फिर, **सेवक पू. अभिषेक** ने जल छिड़का और **पू. स्वाती दीदी** व **पू. गौरी दीदी** ने पुष्पवृष्टि करते हुए धुन की। तत्पश्चात् जगरांव में **पू. अशोक वाधवाजी** के नए plot पर प.पू. गुरुजी ने जल व पुष्पवर्षा से भूमि पूजन करवा कर दो मिनट धुन करवाई। जगरांव के भक्तों को अपने दर्शन-समागम का लाभ देने के लिए सबसे पहले **पू. बलवंतराय भारद्वाजजी** के घर गए। यहाँ धुन-भजन करके दोपहर का प्रसाद लेने के बाद **पू. अशोक शर्माजी** के घर गए। तत्पश्चात् पू. अशोकजी के सामने के घर में रहते अक्षरनिवासी **पू. जीवनलाल झांझी साहेब** के सुपुत्र **पू. राजीव (राजू) झाँझी** के यहाँ जब प.पू. गुरुजी ने प्रवेश किया, तो मुक्तों ने ढोल पर भांगड़ा-गरबा करके उनका स्वागत किया। धुन-भजन के बाद सभी ने प्रसाद लिया और फिर मोगा लौट कर रात्रि प्रार्थना करके विश्राम में गए।

23 सितबंर की सुबह पूजा करने के बाद, **प.पू. गुरुजी** ने **पू. आशीष अग्रवाल** को टीका किया और फिर दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। **लुधियाना** में 'वेरका डेरी' पर **प.पू. गुरुजी** सबको दूध का प्रसाद दिया। **खन्ना** में **पू. राजेश शर्माजी** के घर श्री ठाकुरजी का थाल करके उनका भाव ग्रहण किया। सबको अविस्मरणीय स्मृतियाँ देते हुए रात को 10:30 बजे प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर पहुँचे।

18 सितंबर, पू. प्रणव के जन्मदिन निमित्त पू. कीर्तिभाई जानी के घर पधरावनी...

पानीपत में पू. पुनीत गोयलजी के घर पधरावनी...

गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रासादिक स्थल ब्रह्मसरोवर (कुरुक्षेत्र) के दर्शनार्थ...

पंजाब के मुक्तों द्वारा प.पू. गुरुजी का स्वागत...

मोगा में पू. आशीष अग्रवालजी के घर को पावन किया...

काकाजी पंजाब के हैं और पंजाब काकाजी का है ! -प.पू. गुरुजी

प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. पुनीत मल्होत्रा का जन्मदिन...

लुधियाना में पू. दर्शनसिंह भट्टीजी के घर पधरावनी...

लुधियाना में पू. निखिल वडेराजी के घर पधरावनी...

प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से भक्तों के नये प्लॉट का भूमि पूजन...

लुधियाना में पू. टिम्मी भैया...

जगरांव में पू. अशोक वाधवाजी...

मोगा में पू. विकास वर्माजी...

जगरांव के मुक्तों के घर प.पू. गुरुजी की पधरावनी...

पू. बलवंतराय भारद्वाजजी...

पू. अशोक शर्माजी...

पू. राजीव झांझीजी...

अनुष्ठान शिविर 2024

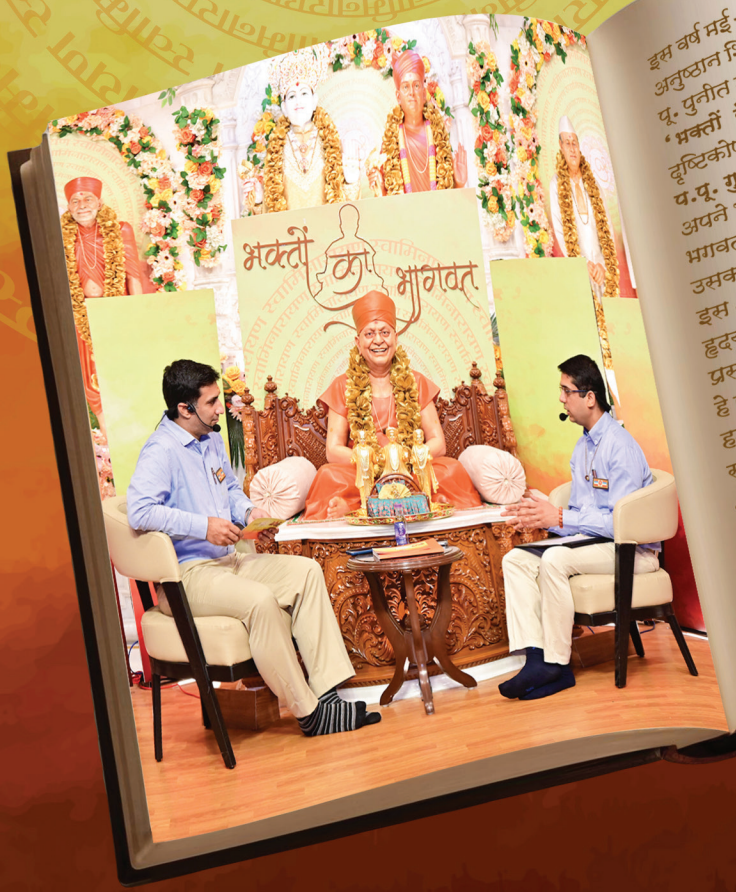

इस वर्ष मई-जून के
अनुष्ठान शिविर में कई मुक्तों ने
पू. पुनीत मल्होत्रा के साथ वार्तालाप करते हुए
'भक्तों के भागवत' के अंतर्गत अपने-अपने
दृष्टिकोण और स्वानुभव से
प.पू. गुरुजी एवं उनके मुक्त समाज के प्रति
अपने भाव प्रकट किए थे।
भगवत् कृपा के पिछले अंक में
उसका थोड़ा विवरण दिया था।
इस अंक में उन मुक्तों के
हृदय के भावों को संक्षिप्त में
प्रस्तुत करते हुए प्रभु चरणों में प्रार्थना करते हैं—
हे प्रभु! आप तो किसी भी रूप में या किसी के द्वारा
हमारा श्रेय करने के लिए तत्पर रहते हैं।
सो, भक्तों-मुक्तों के अंतर के भावों में से
अपने लिए उपयोगी बातों को पकड़ें
और
प्रगट प्रभु की मरज़ी के अनुसार
जीवन जीने की कला सीख कर
आपके बल से अपनी सर्व प्रकार से
प्रगति करवा लें...

भक्तों का भागवत

गुरुजी ने अपने वर्तन से काकाजी को जीवंत कर दिया...

मैंने काकाजी के दर्शन नहीं किये, पर जब कभी चोट लगती है
तब सबसे पहले काकाजी ही याद आते हैं-उनका नाम ही ज़बान पर आता है...
गुरुजी ने कुटुबंभाव का समाज तैयार किया है।
सभी परिवारों के जीवन केंद्र में गुरुजी हैं...
हमारी तो कोई eligibility भी नहीं थी,
गुरुजी ने कृपा करके हमें अपना संबंध दिया।
उन्होंने अपना personal कुछ भी नहीं रखा।
मेरी teenage में गुरुजी ने मेरा हाथ थामा; उससे मैं संभल गया
और
उन्होंने कभी किसी गलत संगत में मुझे फंसने नहीं दिया...
अब मन में एक ही विचार-डर रहता है कि
हमारी वज़ह से कभी भी गुरुजी-दीदी का
नाम ख़राब नहीं होना चाहिए...
श्रीजी महाराज ने कहा है– **संत की आज्ञा में रहना भी**
उनके साथ रहने के समान है...
कोई भी कार्य करते हुए
यदि हम गुरुजी की स्मृति करते हैं,
तो समझें कि हम उनके साथ ही रह रहे हैं...

- Rahul Bhaskar
(Sonipat)

एक बार मेरी बेटी ने स्कूल से घर लौटते समय गलत route ले लिया।
उस समय मैं duty पर था।
मुझे भीतर में **श्रीजी महाराज** व **गुरुजी** ने सूचित किया—
भट्टी, अगर तुम्हारी बेटी गलत auto पकड़ ले, तो तुम क्या करोगे?
मैंने भी मन ही मन उत्तर दिया—
महाराज मुझे क्या करना है, सब कुछ तो आपको ही करना है...
उसी समय मुझे किसी का फोन आया—*आपकी बेटी ग़लत auto में बैठ गई थी।*
अभी हमारी दुकान पर बैठी है, आप आकर उसे ले जाइए या मुझे घर का पता बता दो,
तो मैं उसे वहां छोड़ दूंगा।
यह प्रसंग मेरे दिल को छू गया कि जिस तरह पलकें आँखों की रक्षा करती हैं,
वैसे ही भगवान भक्त की रक्षा करते हैं।
जीवन में जैसे-जैसे प्रसंग बनते गए, उनसे सीख मिली
और
विश्वास बढ़ने से गुरुजी के साथ का संबंध दृढ़ होता चला गया।
पता ही नहीं चला कि
हम कब मंदिर के हो गये और मंदिर हमारा हो गया।
गुरुजी और भक्तों का प्यार मिला, हंसते-खेलते सत्संग करते रहे।
बस, मंदिर के ही होकर रह गये,
अब कहीं और जाने की इच्छा ही नहीं होती।
अब न तो कोई शिकवा है न कोई गिला;
औरों को तो जो भी मिला है उनके मुक़द्दर से मिला है,
हमें तो हमारा मुक़द्दर भी
काकाजी-गुरुजी के दर से मिला है...

- Darshansingh Bhattiji
(Ludhiana)

भक्तों का भागवत

- भगवान की आज्ञा में रहने के फलस्वरूप
  भगवान की मूर्ति साथ रहती है,
  भगवान की मूर्ति यानि– सुख-शांति की अनुभूति।
- सत्पुरुष की आज्ञा में रहने से जटिल स्वभाव भी नष्ट हो जाते हैं।
- सेवा, प्रेम व महिमा से करनी चाहिए।
- सच्चेभाव से की गई सेवा से प्रसन्न होकर बड़े संत अक्षरधाम का सुख दे देते हैं।
- यदि हमारी निष्ठा की नींव मज़बूत होगी
  तो विपरीत परिस्थिति व संजोगों में भी
  सत्संग को छोड़ने का कभी मन नहीं करेगा।
- आत्यांतिक कल्याण प्राप्त करने के लिए **सहन करना ही होगा।**
- सत्पुरुष की आज्ञा का जो जीव
  धैर्यपूर्वक व निर्दोषबुद्धि से पालन करता है
  वह मुमुक्षु कहलाता है।
- **काकाजी ने संत की पहचान करने का मार्ग बताया है** कि
  निष्कपटभाव से निर्मानी होकर
  बिना अंतराय के दास होकर मन, प्राण और
  देह वड़वानल अग्नि समान गुरु को सौंपा जाये।

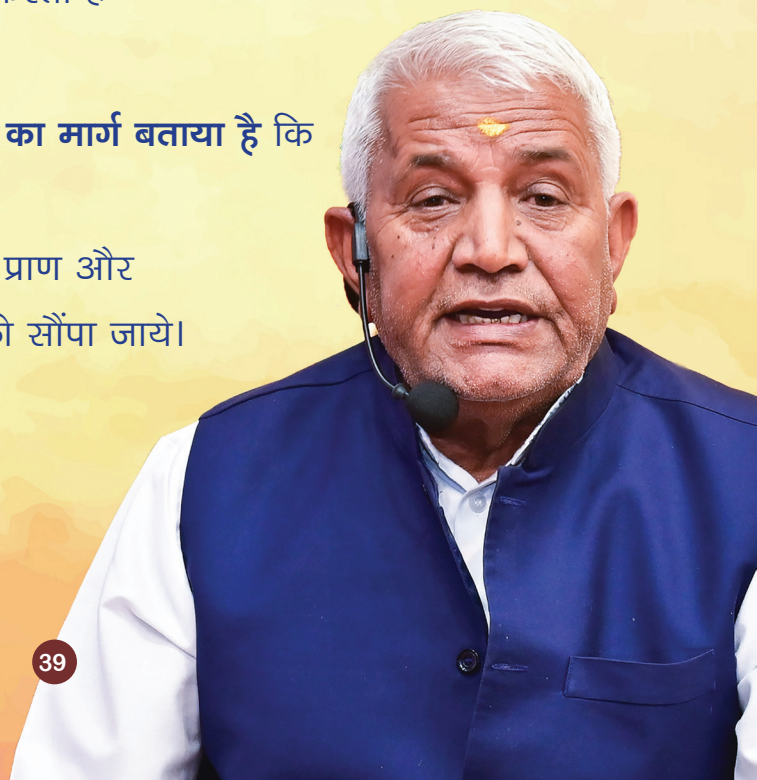

- *Shyamlalji*
(Eteda)

भक्तों का भागवत

1999 के अनुष्ठान शिविर में **मैं जब मंदिर से जुड़ा**
तो एक सकारात्मक vibration **मिली।**
गुरुजी हम सभी के लिए काकाजी की सौगात हैं
वे हमारे लिए धरती पर आए हैं।
हमारे अंतर में जो भाव उत्पन्न हो रहे हों
गुरुजी उसके अनुसार सबको समाधान देते हैं।
यह बात मुझे बहुत touch करती है।
वर्तमान समय में तो AI (artificial intelligence) का ज़माना है
सबको बस फटाफट results चाहिए।
इसके लिए **भगवान स्वामिनारायण धरती पर आए**
और
उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे ग्रंथों का 50 हज़ार पेजों का सार
एक वचनामृत में दे दिया और अपने साथ गुणातीत संतों को लेकर आए।
भगवान स्वामिनारायण ने तो आशीर्वाद दिया है कि
मेरे भक्त का जो दर्शन करेगा, उसका भी कल्याण होगा।
इसी प्रकार, स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन
और
तीन फरवरी पार्क का जो दर्शन करेगा
यहाँ से गुज़रेगा, उसका कल्याण होगा।
काकाजी ने एक सूत्र के रूप में कहा है कि
'मेरे सामने आया मुक्त ब्रह्म की मूर्ति माना जाए...'
मुक्त का अर्थ समझाने के लिए
भक्त की शक्ति और ताक़त उन्होंने बताई।
गुरुजी से यही प्रार्थना हम आंतरिक भक्ति करें
एक focus **से आपकी एक बात भी पकड़ेंगे**
तो जीवन में बड़ा परिवर्तन आएगा।

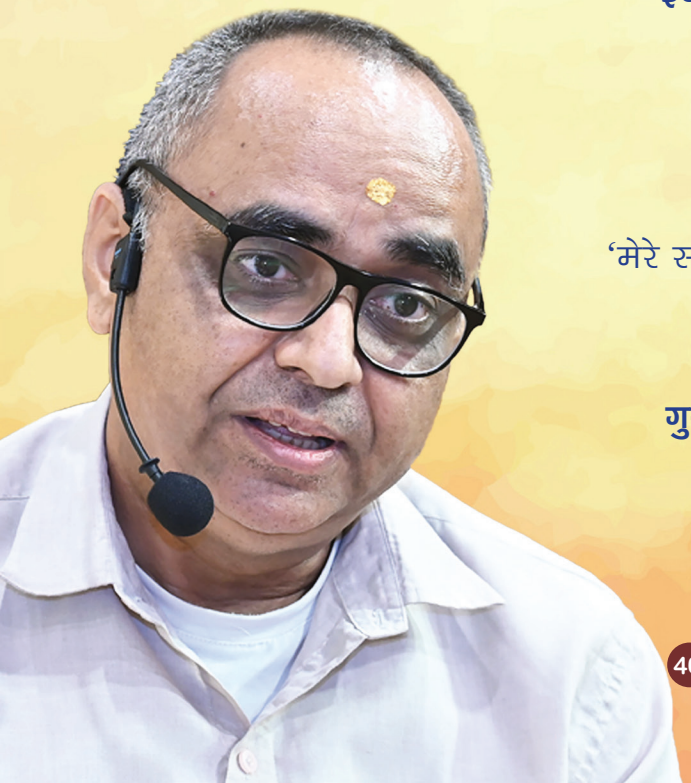

- Siddharth Malhotraji
(Delhi)

मंदिर से जुड़ने के कुछ समय बाद
हमारे जीवन में financial crisis आए।
तब किसी से कुछ बात नहीं की थी।
लेकिन, **आनंदी दीदी** ने शायद face reading करके मुझसे पूछा—
सब कुछ ठीक है न, कोई समस्या तो नहीं? यह मंदिर और हम सभी एक परिवार ही है, सब कुछ सांझा ही है। कोई तकलीफ़ हो तो share करना।
दीदी के कहे ऐसे शब्द दिल को छू जाते हैं।
बाकी हमने तो उनके लिये कुछ भी नहीं किया।
गुरुजी ने बहुत प्रेम दिया है, उनकी आँखों से प्रेम झलकता है
और
वह प्रेम one sided और unconditional है, जो बहता ही रहता है।
गुरुजी का straight forward, transparent nature दिल को छू जाता है...
जनवरी की कड़ाके की ठंड में मेरे बड़े बेटे आशीष की शादी के समय **गुरुजी** ने कहा था—
मैं अपने बच्चों के लिए कभी भी, और कहीं भी जा सकता हूँ।
वे हमें कितना अपना मानते हैं!
अगर गुरुजी हमारे जीवन में नहीं होते, तो हमारा जीवन अर्थहीन हो जाता।
उनके प्रति हमारी भावनाएँ शब्दों में बयां नहीं कर सकते,
वो तो आँखों से छलक ही जाती हैं...
गुरुजी ने सूचन किया था— *सभी गलतियाँ महाराज माफ़ कर देंगे,*
पर ***भक्तों की झंझट या अभाव-अवगुण देखेंगे, तो माफ़ी नहीं मिलेगी।***
तो, उनके सूचन से जीवन में एक परिवर्तन आया कि
अगर किसी का अवगुण दिखाई देता है,
तो automatic भीतर में भजन शुरू हो जाता है...
यदि **हम सब में गुरुजी और दीदी देखेंगे,**
तो हमारी दृष्टि ही बदल जाएगी
और
सब कुछ अच्छा ही हो जाएगा...

- Badrayubhai Jani
(Delhi)

“

...मैं कई मंदिरों में जाता था,
पर इस मंदिर में आकर जो शांति मिली है,
वह कहीं भी नहीं मिली।

मंदिर से मुझे जोड़ने वाले विनोदभाई और प्रकाशभाई के साथ
कई बार मैं शाम को मंदिर आता था।
फिर धीरे-धीरे सभा में आना शुरू किया।
सभा में आने से मेरे स्वभाव बदल गए और बुरी आदतें छूट गईं।
कभी-कभी drink करता था और गुस्सा बहुत आता था।
तो, drink तो छूट ही गया और गुस्से को control करना भी आ गया
और
व्यवहारिकता भी सीखी...
सभा में जब बैठता था, तो मेरे मन में कई प्रश्न उठते थे,
जिनका जवाब कहीं ना कहीं गुरुजी की सभा में से मिल ही जाता था...
मेरे पिताजी को कैंसर हुआ,
तब **गुरुजी** ने मुझे अपने पास बुला कर कहा—
उन्हें कोई तकलीफ़ नहीं होगी,
महाराज आराम से उन्हें ले जाएंगे।
सच वे जब तक जिये,
उन्हें आख़िरी सांस तक कोई तकलीफ़ नहीं हुई।
आज गुरुजी मेरे लिये पिता के स्थान पर हैं...

- Ravi Guptaji
(Delhi)

साधु यानि – सुहृदभाव! एक साथ रहते हुए मतभेद तो होंगे ही,
लेकिन जितना साथ में रहोगे, उतना मैं राज़ी रहूँगा...
ऐसा संकेत देते हुए **गुरुजी** ने हमें हर कदम पर मार्गदर्शन दिया है।
आज हम अच्छी तरह जो सेवाएँ कर रहे हैं, वह सब गुरुजी की शिक्षाओं का परिणाम है।
गद्दे कैसे व्यवस्थित लगाने, जल्दी और अच्छी सेवा कैसे करनी,
महापूजा, आरती, भोग कैसे लगाना – ये सब कुछ गुरुजी ने खुद हमें सिखाया है...
गुरुजी की हाज़िरी में मैंने महापूजा करनी शुरू की, तो खूब ध्यान से सुनते।
जहाँ मेरी गलती होती, तो बाद में खुद बोल कर उसका सही उच्चारण सिखाते...
लंदन यात्रा के दौरान धीरुभाई कपाड़िया के बेटे मिहिरभाई के घर पर सभा में योगीजी महाराज की स्मृति करते हुए **गुरुजी** ने बताया –
बापा जब भोग लगाते थे, तो महाराज साक्षात् ग्रहण करने आते थे। *मैत्री भी ऐसा भोग लगाता है कि महाराज को भूख नहीं भी लगी हो, तो भी उन्हें ग्रहण करने आना पड़ता है।*
मुझ में सेवा का ऐसा भाव नहीं था, लेकिन गुरुजी ने कृपा करके बख़्शीश में वो भाव दे दिया,
ताकि वो महाराज तक पहुँचे...
6 अप्रैल 2013 को साधु की दीक्षा देते हुए
अक्षरविहारीस्वामीजी ने मुझसे पूछा – *आज का दिन तुम्हें पता है?*
मैंने कहा – *हाँ,* ***चंदन अर्चा का दिन...*** **काकाजी का happiest day!**
अक्षरविहारीस्वामीजी ने कहा –
आज के दिन शास्त्रीजी महाराज ने चंदन के लेप द्वारा
काकाजी पर अपने अंतर की प्रसन्नता लूटा दी थी।
ऐसे ही आज गुरुजी ने भी तुम्हें दीक्षा देकर अपनी
अंतर की प्रसन्नता बताई है...
गुरुजी ने हमें देने में कोई कमी नहीं छोड़ी।
स्वामी की बातों में है कि यदि हमें अपने दोषों का ख्याल पड़ जाए
तो यह बड़ी बात है। तो, जैसा कि **काकाजी ने कहा है –**
अब सोचें नहीं, विचारें नहीं, चल पड़े...
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।

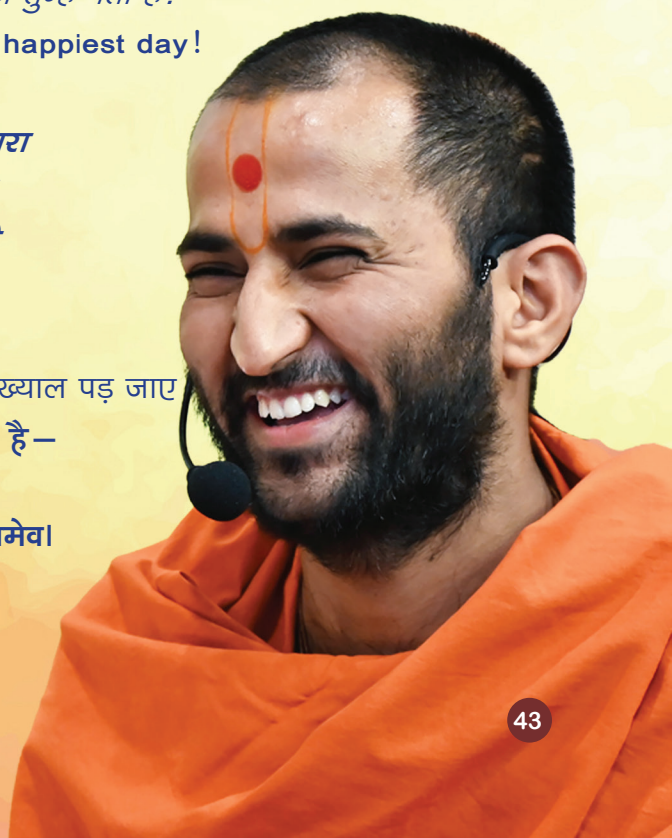

- Sadhu Maitrisheeldass

भक्तों का भगवत

Life में खालीपन था, उसे दूर करने के लिये धुन करना सीखा
और उसकी आदत हो गई।
2022 में 'साधवो हृदयं मम' नाटक की तैयारियाँ देखने के लिए
एक बार गुरुजी आये और उन्होंने कहा— *'नाटक, नाटक न रह जाए... '*
तात्पर्य यह था कि नाटक में आपको जो अच्छा role मिला हो, उसे जीवन में धारण करना।
गुरुजी कई बार कहते हैं, *'कोई नई बात नहीं करनी... '*
इस बारे में **बड़ी माँ (आनंदी दीदी)** ने मुझे समझाया कि हमें जो ज़रूरी लगता है
हम उतना ही करते हैं, परंतु **गुरुजी जो कहते हैं, उसे स्वयं जीकर बताते हैं...**
पहले मेरा एक impulsive nature था कि जो भी चाहिए, वो जल्दी चाहिए।
I was in a rush always
लेकिन, गुरुजी-बड़ी माँ ने सिखाया कि धीरे-धीरे सब मिल जाएगा।
दुबई में गुरुजी के साथ एक learning मिली।
एक जगह गुरुजी के लिए pen खरीदने गए।
सब सोच रहे थे कि गुरुजी को अगर कोई pen अच्छा लगेगा तो हम वह ले लेंगे।
गुरुजी को एक pen पंसद भी आया, लेकिन उन्होंने कहा— *क्यों लेना है?*
पैसों को उड़ाना नहीं है, भले ही खरीद सकते हैं, पर क्यों लेना है?
इस तरह गुरुजी अपने वर्तन से सिखाते हैं।
मुझे लगता है कि हम केवल गुरुजी का जीवन चुपचाप देखें,
तो भी बहुत कुछ सीख सकते हैं...
गुरुजी को मैं grandfather के रूप में देखता हूँ।
जिसकी life में जो vacuum होता है, गुरुजी वह fill कर देते हैं...
विपरीत सोच वालों को एक साथ रख कर समाज तैयार किया है।
गुरुजी हमारी तरह सोचते, खाते, रहते हैं
और
अपनी दिव्यता छुपा कर रखते हैं...

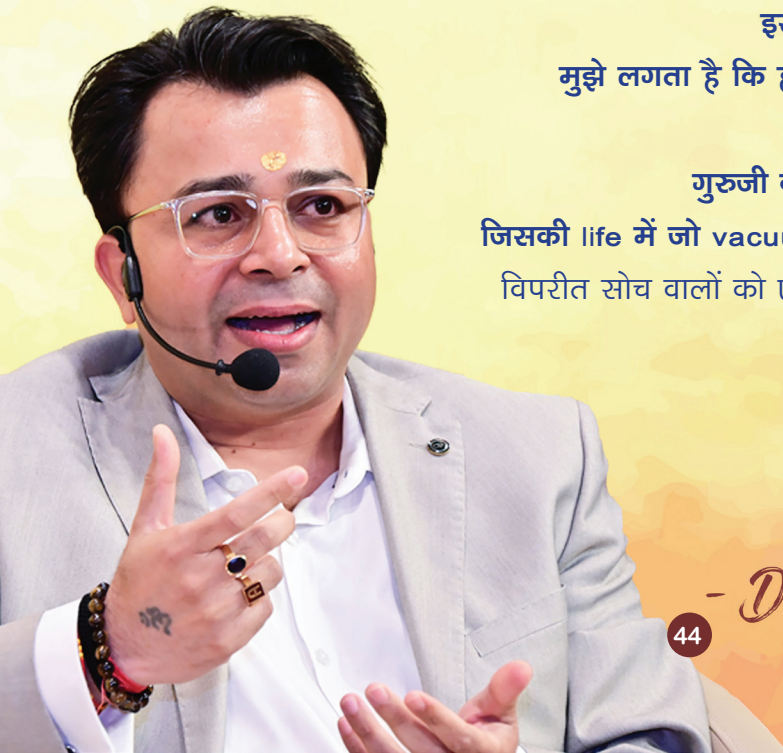

- Dr. Shaghikant Mishra
(Delhi)

भक्तों का भागवत

"

व्यावसायिक तौर से मैं पहली बार मंदिर आया था,
लेकिन धीरे-धीरे जब यहाँ से जुड़ने लगा, तो एहसास हुआ कि
सेवा मेरी प्राथमिकता बन गई है।
गुरुजी का पहला अनुभव जो मुझे हुआ, वह उनकी availability and accessibility थी।
मंदिर के प्रमुख होते हुए भी वे सभी के लिए आसानी से उपलब्ध हैं, जहाँ कोई बंधन या protocol नहीं।
धीरे-धीरे गुरुजी के प्रति मेरा और मेरे परिवार का भी लगाव होता गया...

हमारे मल्कानी अंकल के एक अनुभव ने मुझे गुरुजी से जुड़ने में मेरी बहुत मदद की। उन्होंने बताया कि अगर गुरुजी साधु न होते, तो वे बहुत बड़े business tycoon होते। खुद एक बड़े businessman होने के बावजूद मल्कानी अंकल ने जब यह बात कही, तो वह मेरे भीतर तक बैठ गई। मैंने अपने अनुभव से महसूस किया कि **गुरुजी को व्यावहारिक जीवन की भी उतनी ही समझ है, जितनी आध्यात्मिक जीवन की**...

मुझे पान खाने की इतनी नियमित आदत थी कि जिस पनवाड़ी से पान लेता था, उसे भी याद रहता था कि मुझे किस नंबर के तम्बाकू का पान देना है। एक दिन मैं मंदिर आया, तो अक्षरस्वरूपस्वामी को शायद इसका अंदाजा हो गया। तो, उन्होंने इस तरीके से मुझसे बात की कि मुझे बिल्कुल भी एहसास न हो। फिर अगले दिन गुरुजी के दर्शन करने आया, तो उनके चरण स्पर्श करने के बाद मुझे महसूस हुआ कि गुरुजी को शायद मेरे तम्बाकू के पान की महक आई होगी।
फिर उस दिन से लेकर आज तक मैंने पान नहीं खाया...
प.पू. गुरुजी का पारदर्शी जीवन मुझे बहुत touch करता है।
कई मंदिरों में गया हूँ, लेकिन यहाँ कुछ अलग ही एहसास है...
गुरुजी हमें हमेशा हमारी समझ के अनुसार guide करते हैं...
गुरुजी किसी भी ग्रंथ का निरूपण इस प्रकार करते हैं कि
वो हमारे अंतर में बैठ जाता है...
हमारा जो यह समाज है, वो गुरुजी से है।
उन्होंने बहुत परिश्रम किया है-परवरिश की है।
SO, HE IS AN INSTITUTION
MENTOR, GUIDE AND SAMAJ HIMSELF.

-Nishith Mishraji
(Delhi)

“

जब मैं कुछ दिनों का था, तब गुरुजी
मुझे मंदिर लाने के लिए घरवालों से कहते थे।
गुरुजी मेरे कान में बोलते थे— ***‘આપણે માયાના નથી, ભગવાનના છીએ...’***
तब किसी ने सहज ही पूछा— *गुरुजी, यह तो अभी चार दिन का बहुत छोटा है, इसे यह बात क्या समझ आएगी?*
गुरुजी ने कहा— *शब्द कानों में जाते हैं और वही काम आते हैं।*
मुझे गुरुजी के साथ कई trips पर जाने का मौका मिला।
मुझे ऊँचाई से बहुत डर लगता है। Singapore Flyer में जब बैठे,
तब गुरुजी ने अपने हाथ पर मेरा हाथ रखा, मुझे मन में एक ही विचार आया—
गुरुजी हैं, तो डरना कैसा?
ऐसे ही Dubai Frame में glass के ऊपर उन्होंने मेरा हाथ थाम कर चलाया।
इन दोनों अनुभवों से यही सीखा कि
वे कैसे पल-पल हमारे हर एक कदम पर साथ चलते हैं।
दुबई में pen खरीदने गए,
तब गुरुजी ने सहज ही कहा—(pen में) *‘कहाँ फंसा?’*
गुरुजी तो बिल्कुल अमायिक हैं, पर
अपने इस gesture से उन्होंने मुझे समझाया कि
हमें इस माया के brand और शान-शौक़त में नहीं फंसना...
एक बार गुरुजी के कमरे में बैठ कर मैं पढ़ रहा था।
वहाँ से गुज़रते हुए गुरुजी ने कहा— *85% marks लाने हैं।*
साथ में खड़े मैत्रीस्वामी ने कहा— *‘हाँजी बोल दो...’*
जैसे आशीषभाई और अभिषेकभाई ने उन्हें
गुरुजी को हमेशा ‘हाँजी’ कहना सिखाया,
ऐसे ही उन्होंने मुझे सिखाया...

एक बार गुरुजी ने श्यामलाल अंकल को कोई चीज़ लाने के लिये कहा।
श्यामलाल अंकल ने कहा— *'गुरुजी, बहुत मुश्किल से मिलेगी...'*
तब गुरुजी ने कहा— *'आप कोशिश तो करो।'*
उन्होंने जब 'हाँजी' कहा, तो **गुरुजी** बोले—
हमें तो सिर्फ 'हाँजी' बोलना है, बाकी सब महाराज संभालेंगे।
यूँ गुरुजी ने सहजता से रहस्य बता दिया...
एक बार मैं बहुत थक गया था। सरयूस्वामी ने पूछा— *क्या हुआ?*
मैंने बताया— *थोड़ा झाड़ू-पोंछा करके अब थकान लग रही है।*
उन्होंने सूचन दिया— *हम कोई भी सेवा संत की स्मृति के साथ करेंगे,*
तो उसका फल मिलेगा। वर्ना वो सिर्फ कारखाने में काम करने जैसा है।
सेवा हमेशा भगवान की स्मृति करके करनी चाहिए। मानो बर्तन साफ़ करें या पोंछें,
तो इस भाव से करना कि मेरे अंदर की भी सफ़ाई हो रही है, तब थकान नहीं लगेगी...
मेरी जोड़ और मेरा best friend नीरव, अपने नाम की तरह शांत और शीतल है।
वह कभी भी उत्तेजित नहीं होता। **उसकी एक छोटी-सी बात है, मेरे जीवन में महत्वपूर्ण हो गई!** अनुष्ठान शिविर के रजिस्टर पर सब sign करते हैं। नीरव सोच रहा था कि अब उसने ड्रेस ले ली है, तो उसका नाम भी staff में print होकर आएगा।
मेरा नाम तो print था, लेकिन नीरव का नहीं लिखा था। तुरंत ही उसने याद किया कि दीदी ने उसे कहा था कि ***जो नक्षत्र को मिले, वो नीरव को भी मिला, ऐसा मानना।***
जो बात उसने इतनी आसानी से बोल दी, मुझे उसे समझने में कई दिन लग जाते...
गुरुजी मेरे लिए सब कुछ हैं, वे मेरी आत्मा हैं। उनका एहसास रूह से महसूस होता है। जैसे काकाजी ने योगीबापा का सेवन किया था, वैसे ही गुरुजी ने काकाजी का सेवन किया। उनकी हर क्रिया हमारी साधना के लिए है। जैसे एक माली अपने पौधे की देखभाल करता है, वैसे ही गुरुजी ने हमें संभाला है। जब पौधा बड़ा हो जाता है, तो माली को उम्मीद रहती है कि अब यह फल देगा। वैसे ही उन्हें भी उम्मीद होती होगी कि उनके बच्चे उनके मुताबिक़ जिएं। अब मेरा जीवन गुरुजी के लिए कुर्बान है।
उनकी प्रसन्न दृष्टि मुझ पर हो जाये—यही प्रार्थना!

- Sevak Nakshatra

मैंने अपने जीवन में गुरुजी की दो बातें हमेशा पकड़ कर रखी हैं।
पहली बात—सत्संग वही अच्छा है, जो बच्चों से लेकर
माता-पिता तक पूरा परिवार करे।
दूसरी बात—साधु की मरज़ी में मिट जाना। वे जो सेवा करने के लिये कहें,
बस 'हाँ जी' कहना।
2010 में मुंबई के 'मैत्री मिलन महोत्सव' में जाने के लिए गुरुजी ने सबसे कहा था कि
जिसे जाना हो, वह अपना नाम लिखवा दे।
मैंने अपनी पत्नी मंजू से कहा—*मैं मुंबई जाऊंगा।*
उसने कहा—*आपने हमारा नाम नहीं लिखवाया।*
मैंने कहा—*नहीं, इस बार मुझे जाने दो...*
एक दिन रद्दी दान की सेवा करके मंदिर आया,
तो गुरुजी ने अपने पास बुला कर मुझसे कहा—*बेटा, इस बार तू मुंबई मत जा।*
मैं तो वहाँ जाता रहता हूँ, तो फिर कभी ले जाऊंगा।
इस बार मंजू और तेरे बेटे शुभम् को भेज दे। पीछे से मंदिर में रह कर रखवाली करना।
गुरुजी ने मुझे 'बेटा' कहा, तो भीतर में शांति हो गई और एहसास हुआ कि
गुरुजी हम पर कितना भरोसा करते हैं और सबका अंतर्मन जानते हैं...
मेरे जीवन में मंजू बिलकुल सावित्री की तरह है।
गुरुजी के प्रति उसके अटूट विश्वास ने ही
मुझे भयंकर accident होने के बाद भी बचा लिया।
वो हमेशा एक ही बात कहती—
काकाजी और गुरुजी हमारे साथ हैं, तो आप अच्छे होकर घर आ जाओगे।
गुरुजी ने भी सपने में कई बार बताया—
मैं तुझे धाम में लेकर जाने वाला नहीं हूँ...
गुरुजी बहुत powerful साधु हैं।
वह चाहते तो कितने मंदिर बना सकते थे, लेकिन उन्होंने
एक मुट्ठी की तरह पारिवारिक सत्संग ही करवाया...

- Suresh Sagarji
(Faridabad)

...कई बातें हम सिर्फ कह देते हैं, लेकिन गुरुजी अपना कहा हुआ निभाते हैं।
1997 में रानीखेत से दिल्ली लौटते हुए, गुरुजी खुद मुझे पानीपत छोड़ने आए
तब उनकी प्रभुता का दर्शन-एहसास हुआ कि
जो मुझे रानीखेत से पानीपत तक छोड़ने आए, वे मुझे जीवन के अंतकाल तक नहीं छोड़ेंगे...
फिर धीरे-धीरे मैं मंदिर का कब हुआ और मंदिर कब मेरा हो गया, पता ही नहीं चला।
यह एक एहसास है जो हमें पता नहीं चलता, लेकिन होता रहता है।
गुरुजी कभी नहीं कहते कि तुम मेरे हो, वे तो हमें अपना लेते हैं
और
स्वाभाविक रूप से वे ही हमारे हो जाते हैं।
गुरुजी का दर्शन करके पहला विचार यही आता है कि **'कमाल है, गुरुजी आए मेरे जीवन में...'**
काकाजी ने गुरुजी को 'तीनों सूर्य एक' होने का आशीर्वाद देकर,
हम सबको गुरुजी के स्वरूप का दर्शन कराया कि ये संत भी उनके जैसे हैं।
भगवान सबके हैं, लेकिन गुरुजी मेरे लिए मेरे Personal God हैं...
मैं पहली बार मंदिर आया तो बहुत सारी मूर्तियों के दर्शन किए
लेकिन personal की परिभाषा मुझे गुरुजी के रूप में मिली।
गुरुजी ने संतों, भाइयों, बहनों, गृहस्थों से मिल कर बने
चार पंखुड़ियों के गुणातीत समाज में सबके लिए कार्य किया है,
यह हमारे समाज की uniqueness है।
संतों की बात करूं, तो **सुहृदस्वामीजी तो जादूगर हैं,**
वे भजन करते हुए प्रसाद बनाते हैं।
और... गुरुजी का वर्णन तो शब्दों में नहीं किया जा सकता।
फिर भी कुछ पंक्तियों में अपनी भावना व्यक्त करता हूँ—
श्रीजी जिनके 'पिता' हैं, गुणातीतानंद जिनकी 'माँ' हैं
'काकाजी' जिनका धाम हैं, 'मुकुंद' जिनका नाम हैं
ऐसे मेरे गुरुदेव को बारंबार प्रणाम हैं।

- Puneet Goelji
(Panipat)

...1997 में गुरुजी अपना heart operation
कराने के लिये मुंबई आये थे।
उन्हें Airport से सीधा लीलावती अस्पताल ले जा रहे थे,
तब गाड़ी में पहले से लगी हुई काकाजी की 'सिंहगर्जना' कैसेट चलाई,
उसमें **काकाजी** बोल रहे थे— ***'राजा, operation करा ही लेना...'***
गुरुजी ने उस समय तो नहीं बताया, पर बाद में बताया कि
उन्होंने अपने मन में पक्का कर लिया था कि काकाजी ने ये शब्द उनके लिए कहे हैं।
गुरुजी की यह बात बहुत स्पर्श कर गई कि अचानक ही कैसेट में बजे
काकाजी के वाक्य को भी गुरुजी ने कैसा जीवंत और दिव्य मानकर operation कराया।
गुरुजी के operation के समय सत्संग में भक्त आपस में एक-दूसरे से जुड़े...
एक बार गुरुजी के साथ डोंबीवली जाते हुए,
दीपक से car accident हो जाने के कारण
उसका confidence बिल्कुल खत्म हो गया कि *अब मैं गाड़ी नहीं चला सकता।*
तभी **गुरुजी** ने कहा— *मेरी गाड़ी दीपक चलाएगा।*
आधे रास्ते में फिर **दीदी** ने कहा—
अब आगे दीपक मेरी वाली गाड़ी drive करेगा।
अगर गुरुजी और दीदी के साथ बैठकर दीपक ने गाड़ी नहीं चलाई होती,
तो शायद गाड़ी चलाने का confidence उसे कभी आता ही नहीं...
23 may 2001 को गुरुजी ने हमें **बेटी** के रूप में
आनंदी दीदी की अनमोल भेंट दी।
गुरुजी ने दीदी के साथ जो यह relation बनाया, वह unparallel है।
दीदी वो हैं कि कई बार हम कुछ
कहना चाह रहे होते हैं, पर बोल नहीं पाते।
तब वे सामने से कह कर निवारण भी कर देती हैं...

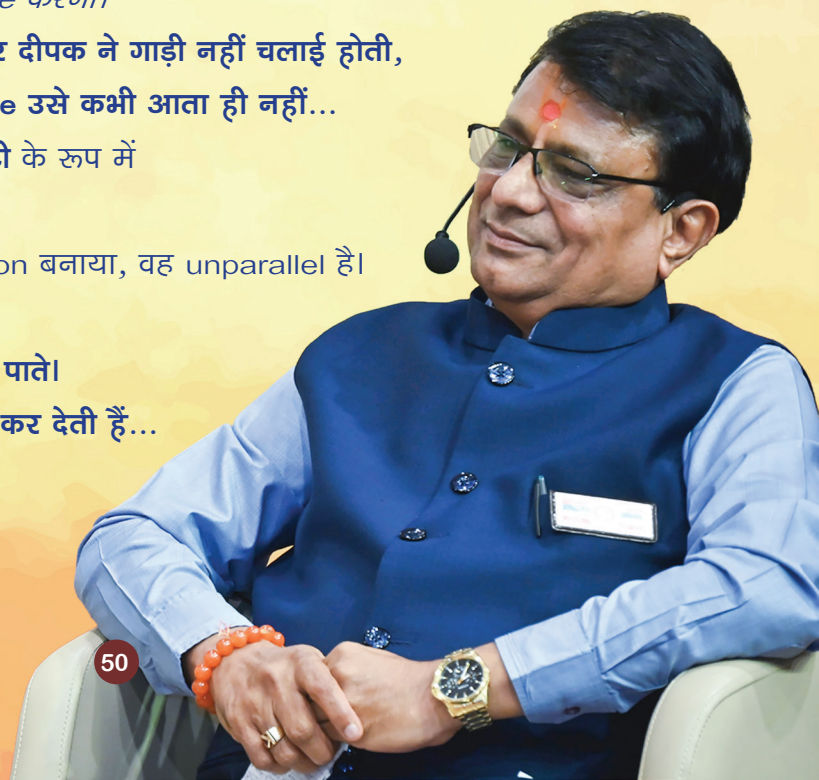

मुझे (**दीपक**) तीन बार नृत्य नाटिका में गुरुजी का रोल करने का मौका मिला।
पहले तो confusion हुआ कि करूँ या नहीं।
पर, गुरुजी की बात याद आई कि never refuse a good offer.
तो, गुरुजी का रोल करते हुए मुझे उन
moments को जीने का मौका मिला जो वे जी चुके हैं।
गुरुजी के प्रसंगों द्वारा उनकी सोच-vision को महसूस करने का मौका मिला...
मुझे ख्याल पड़ा कि सुनने में और वास्तविकता में बहुत फ़र्क है कि
गुरुजी ने zero में से जिस समाज का सर्जन किया है, वह अकल्पनीय है।
दिल्ली में जहाँ कोई गुरुजी को जानता नहीं था, वहाँ उन्होंने एक समाज तैयार किया।
हमारे लिए ही एक exclusive समाज तैयार किया है।
He is always available to us in any point in time—कोई भीड़ नहीं है।
2017 में pre recorded video के रूप में एक docu-drama बनाया था।
उसमें एक सीन था कि गुरुजी ने कैसे vision रखकर
अक्षरज्योति के बाहर की गली में नीम के पेड़ लगाए थे!
उसकी shooting करने में काफ़ी समय लगा।
वह देख कर मुझे हुआ कि यह scene create करने में
इतना समय लगने से सब कैसे परेशान हो गए।
जबकि **गुरुजी ने तो सत्संग कराने के लिए**
कितने सालों तक patience-धीरज रखी...

THANKS TO GURUJI FOR THE EXCLUSIVE SAMAJ.
HE IS ALWAYS AVAILABLE FOR DEVOTEES.
IT'S A BLESSING THAT WE HAVE
DIRECT RELATION WITH GURUJI...

- O.P. Agarwalji
&
Deepak Agarwal
(Mumbai)

...दीदी और सबने मिलकर 'भक्तों का भागवत' event organise किया है
उसमें सबसे ज़्यादा efforts पुनीत के हैं।
क्योंकि वह पहले सब के साथ बैठ कर उनके प्रसंग सुनता है
उनकी feelings समझता है, फिर यहाँ स्टेज पर उनसे बात करता है।
दीदी और गुरुजी से प्रार्थना है कि पुनीत को एक गिफ्ट दें...
1993 में मुंबई में काकाजी के अमृत महोत्सव के समय गुरुजी के पहली बार दर्शन हुए
और
गुरुजी से जो नज़र मिली, वह तो love at first sight जैसा हो गया।
हमारी प्रार्थना से गुरुजी घर पर आए... मेरे बड़े भाई भाविन को कंठी और मुझे माला दी।
गुरुजी ने कहा कि यह माला लेकर ताड़देव मंदिर में 10 मिनट धुन करोगे,
तो सारी मुश्किलें हल हो जाएँगी...

मेरी माताजी नीताबेन (बेबा) अपनी कुलदेवी की पूजा करती थीं।
मैं और भाविनभाई एक बार दिल्ली मंदिर जाने वाले थे, तब बेबा थोड़ा चिंतित थीं कि
क्योंकि हमें स्वामिनारायण के नए धर्म के बारे में ज़्यादा ख्याल नहीं था।
तो, जब बेबा अपने मंदिर में पूजा कर रही थीं, तब उन्होंने सामने रखे
दीये की ज्योत बड़ी होती देखी और उसमें से आवाज़ आई—
जैसे मैं तुम्हारे कुल की माताजी हूँ,
तो गुरुजी पिताजी जैसे हैं। आप चिंता मत करना...

1997 में लीलावती अस्तपाल में गुरुजी का heart operation हुआ
तब उन्हें रात को नींद नहीं आती थी।
सो, मैं और भाविनभाई बारी-बारी
रात को रुकने की सेवा के लिये वहाँ जाते थे।
गुरुजी के कहने पर मैंने उनके पाँव सहलाये
तब पहली बार गुरुजी की divine body का divine स्पर्श किया...

एक बार कोई property बेच कर हमें profit मिला
तो हमने वह गुरुजी को देना चाहा
लेकिन उन्होंने वह accept नहीं किया।

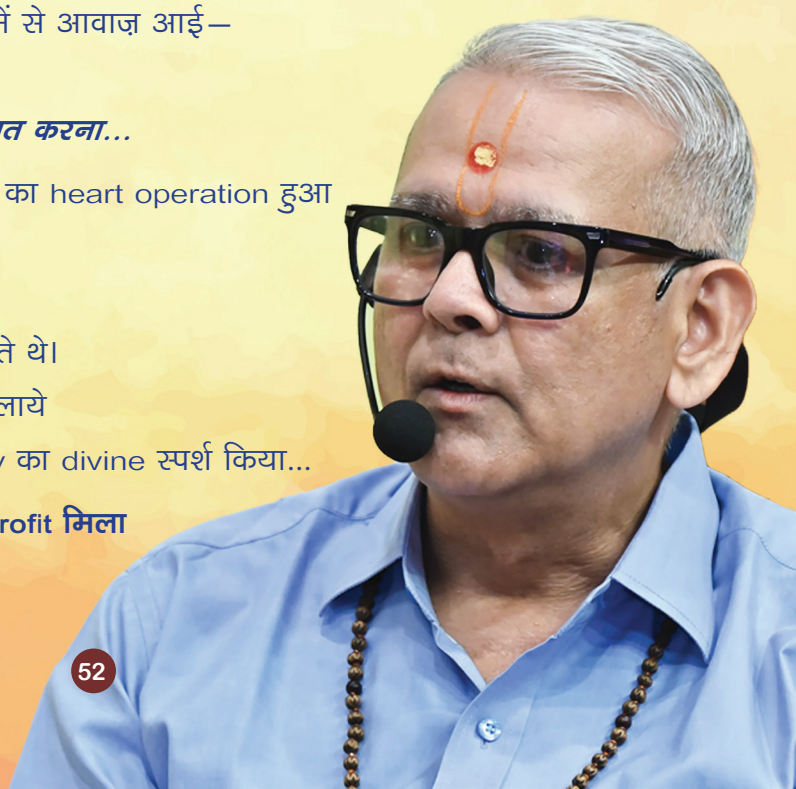

यह बहुत बड़ी बात है।

अधिकतर ऐसा होता है कि किसी संत या साधु को अगर कोई भेंट

या

बड़ा amount देते हैं, तो वे सहज ले लेते हैं।

पर, **काकाजी के सिखाए हुए सिद्धांतों पर गुरुजी जो चलते हैं**

यह बात बहुत touch कर जाती है...

गुरुजी ने हमें कहा था कि यह पवई का मंदिर-काकाजी का है।

तो, **तुम वशीभाई और भरतभाई से जुड़े रहना, उनके पास आते-जाते रहना।**

जब तक हम मुंबई में रहे, तब तक वहाँ जाते रहे।

गुरुजी ने हमें सर्वदेशीयता से जीना सिखाया। काकाजी के आशीर्वाद हैं कि

सारे गुणातीत समाज में दिल्ली का केन्द्र अनोखा बनेगा, तो गुरुजी हमें वैसी ही सीख देते हैं...

2005 में परछाईं दीदी का kidney transplant होना था

उस समय अमदावाद में 10-12 परिवारों ने एकजुट होकर

एक कुटुंब बन कर जो सेवा की, वह गुरुजी के बल के बिना अकल्पनीय थी।

गुरुजी ने तब हम सबको कुटुंबभाव से जीना सिखाया।

कोई नाश्ता, कोई दोपहर का लंच, तो कोई डिनर लेकर आता था वगैरह।

Normally kidney transplant एक गंभीर episode है, जिसमें लोग mentally डूब जाते हैं

पर गुरुजी ने इसे 'kidney उत्सव' जैसा बना दिया था।

गुरुजी ने यह जो समाज तैयार किया है,

उसमें सभी को एक-दूसरे के प्रति intimacy, आत्मीयता और कुटुंबभावना है...

2015 अमदावाद में मेरी पत्नी तृप्ति और मेरा accident हुआ था।

तब **रेखा बहन अस्पताल में तृप्ति के साथ रहीं और परिमलभाई ने खूब धुन करी।**

हमें किस-किसने सहायता नहीं की?

किसका नाम लें और किसका नहीं, सभी हरिभक्त जैसे एकजुट हो गए थे...

अमदावाद के कई हरिभक्तों की व्यावहारिक setting में भी परिमलभाई का बहुत बड़ा हाथ है

यह सब गुरुजी के परिश्रम से ही हुआ है...

- Samirbhai Dave

(Delhi)

भक्तों का भागवत

"

सालों पहले हम यमुना विहार से अनुष्ठान शिविर में आते थे।
सुबह 5:30 बजे घर से निकल कर
तीन बस बदल कर 6:30 तक मंदिर पहुंचते थे।
गुरुजी अपने पास जो chocolates का bowl रखते थे, उसके लालच में हम आते थे।
बस ऐसे ही **गुरुजी ने हमें अपना बना कर अपने से जोड़ लिया...**
मेरे (**निमित्त**) 12th class के exams के बाद एक दिन आशीष भैया का फोन आया कि
construction की सेवा है, तो 10-15 दिन के लिए मंदिर आ सकता है?
मैंने 'हाँ' कहा और मुझे purchasing की सेवा मिली।
तब चेतन ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। बाज़ार की एक-एक गली का रास्ता समझाया।
मंदिर के लिए कम पैसों में सामान कैसे लाना, ये सारी बारीकियाँ समझाईं।
सबसे ज़रूरी बात तो **गुरुजी ने कही थी कि रोज़ मिल कर धुन करना, ताकि सब काम सहज हो।**
राकेश अंकल, कौशिक अंकल, अनिलजी, शैलेशभाई, आशीष भैया, मिलन भैया
सोमनाथजी, चेतन और सबके मन में यह बात set हो गई थी कि धुन से सब हो जाएगा
तो सब मिल कर तीन बार धुन करते थे...

Exams के कारण मैं (**सौरभ**) 'अर्चिमार्ग की ओर' नाटक में भाग लेने के लिये
सबसे बाद में आया, लेकिन सबसे ज़्यादा role मेरे पास ही थे।
एक सबसे important scene, जिसमें दिलीपभाई (गुरुजी) को
काकाजी साधु बनने के लिए कह रहे हैं कि
तुझे कुछ नहीं करना, सिर्फ 'हाँ' कहना है, वह role मुझे मिला।
मैं अपने आपको बहुत lucky समझ रहा था कि
जिस base पर नृत्य नाटिका चल रही थी,
उसका सबसे important scene मुझे मिला है...
2012 के function में मंदिर के
third floor पर सभी स्वरूप ठहरे हुए थे,
वहाँ परेशभाई दोषी के साथ
मुझे (**सौरभ**) सेवा सौंपी गई थी।
मैं तब छोटा था और Dance व Play
दोनों होने के कारण मैं देर रात को वहाँ पहुँचता था।
मेरे आने से पहले परेशभाई सब संभाल लेते थे।

एक बार बहुत थका होने के कारण सोने से पहले मैं पैरों में गर्म पट्टी बांध रहा था। तब अक्षरविहारीस्वामीजी की सेवा में आये **बापुस्वामीजी** ने वह देख कर कहा—

मैं स्वामीजी के पैर दबाने की सेवा करता हूँ, तो उन्हें अच्छा लगता है।

मैं तुम्हारे भी पांव दबा देता हूँ, दर्द कम हो जायेगा।

मैंने बहुत मना किया, पर वे माने नहीं। **मैंने इस प्रसंग से एक चीज़ सीखी कि दासत्वभाव की कोई सीमा नहीं होती। मैं तो एक छोटा-सा लड़का और वे उच्च कक्षा के संत! गुरुजी भी यही सिखाते हैं कि दास होकर जीना और वह मैंने उस दिन बापुस्वामी से सीखा...**

2016 में गुरुजी युवकों को गुजरात-मुंबई ले गए थे... वह trip मेरी life का turning point बना। मुंबई में कई प्रासादिक स्थलों पर गुरुजी ने खुद दंडवत किया और हम सबको भी प्रणाम करने के लिए कहा। यह काकाजी के प्रति उनकी भक्ति अदा करने का एहसास कराता है। ताड़देव में गुरुजी के साथ सबने जो एक चित्त से धुन की थी, वैसी धुन मैंने आज तक नहीं देखी। जब स्वामीजी के पास सोखड़ा गए, तो **गुरुजी** ने उन्हें हमारे लिये कहा कि ***'यह मेरी सेना है।'*** **गुरुजी ने हमें अपना मान कर ग्रहण किया, इससे बढ़कर कुछ नहीं—यह बात पकड़ कर 2017 में काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी में youths ने तीन दिन जो सेवा की, उसका बल उसकी energy यहीं से मिली।**

2014 में पापा (**दिलीपभाई शाह**) के अक्षरनिवासी होने के बाद financial crisis आए, तब दिवाली के दिन मेरे (**सौरभ**) पास पहनने को अच्छे कपड़े नहीं थे। मैंने मम्मी (**प्रीति शाह**) को मना कर दिया कि मैं मंदिर नहीं जाऊंगा। किसी तरह मुझे पटा कर मम्मी मंदिर ले आईं। मंदिर आकर मैंने किसी से कोई बात नहीं की थी और **दीदी** को जैसे ही प्रणाम किया कि उन्होंने मुझे अपने पास बुला कर कहा— ***'दिवाली है, तो मैं तुझे नये कपड़े दूँ या पैसे... तू अपने आप नये कपड़े ले आ...'***

दीदी का इतना ही कहना था कि मुझे रोना आ गया। दीदी माँ का स्वरूप हैं हमारा अंतर पढ़ लेती हैं। दीदी ने मुझे एक सेवा दी है कि कल्पवृक्ष हॉल में उनके सोफे से थोड़ी दूरी पर मैं बैठा करूँ, ताकि किसी के लिये कभी कोई message भिजवाना हो, तो आसानी रहे। इस सेवा से मुझे यह फ़ायदा हुआ कि पहले मैं सभा में लगातार बैठता नहीं था, तो बैठने लगा और सभा सुनने से मेरे जीवन में बदलाव भी आया।

पापा के धाम में जाने के बाद गुरुजी ने हमें खूब संभाला और कहा—

मैं हूँ न, तुम चिंता क्यों करते हो?

यह शब्द सुनते ही अंतर में एक शांति हो गई

और उन्होंने यह सिर्फ कहा नहीं, वे उसे आज तक निभा रहे हैं...

-Nimit & Saurabh Shah

(Delhi)

मंदिर से बहुत कुछ सीखने को मिलता है, जो आज मुझे
professional life में भी बहुत काम में आता है।
1997—गुरुभक्ति यज्ञ से मैं मंदिर आने लगा था।
उस दौरान बहुत छोटी-छोटी चीजें सीखने को मिलीं।
जैसे पेपर कैसे fold करना, गुरुजी लिखते हैं तो कैसे लिख रहे हैं,
यदि लिफाफे में पेपर डालना हो तो कैसे डालें, staple करना हो तो कैसे करें।
यह सारा अनुशासन धीरे-धीरे जीवन में आने लगा...
जब गुरुजी के साथ trips पर जाना हुआ, तो किस तरीके से बड़ों से मिलना, पैर छूना इत्यादि बिल्कुल ऐसे सिखाया जैसे एक बाप अपने बच्चे को सिखाता है।
उन्होंने यह भी सिखाया कि यदि trips पर जाना हो, तो बिना पापा की आज्ञा के नहीं जाना।
गुरुजी के लिए तो सिर्फ मंदिर की सेवा नहीं, उनके भक्तों की भी सेवा उतनी ही ज़रूरी है,
वो उन्होंने खुद practical जीकर बताया...
मुझे dance करना बहुत पसंद... कोई भी बारात जाती थी, तो मैं नाचने चला जाता।
फिर जब मंदिर के functions में डांस किया, तो **गुरुजी** ने ऐसा आशीर्वाद दे दिया कि
'यहाँ नाच लिया, तो जगत में नाचना नहीं पड़ेगा...'
और तब से मैं बाहर कहीं नहीं नाचता। गुरुजी का यह आशीर्वाद मेरे साथ एक स्मृति है...
2004 में अभिषेकभाई जब बीमार हुए थे, तब मुझे गुरुजी की सेवा में रहने का सौभाग्य मिला।
उस दौरान मेरे अंदर काफ़ी बदलाव आया।
गुरुजी, संतों और बहनों ने बहुत प्यार से मुझे मंदिर में रखा।
तब age ऐसी थी कि अगर मैं उस समय मंदिर नहीं आता,
तो शायद यहाँ नहीं होता और pilot भी नहीं बन पाता...
एक बार मंदिर की construction चल रही थी
और हम गुरुजी के साथ कहीं बाहर जा रहे थे।
तब funds के लिये किसी हरिभक्त का दिया suggestion
अभिषेकभाई गुरुजी को बता रहे थे कि
वे कह रहे थे हम कुछ commercial activity start करके
मंदिर पूरा करने के लिए fund इकट्ठा कर लेते हैं।
गुरुजी ने तुरंत इस बात के लिये मना कर दिया
और अभिषेकभाई से कहा—

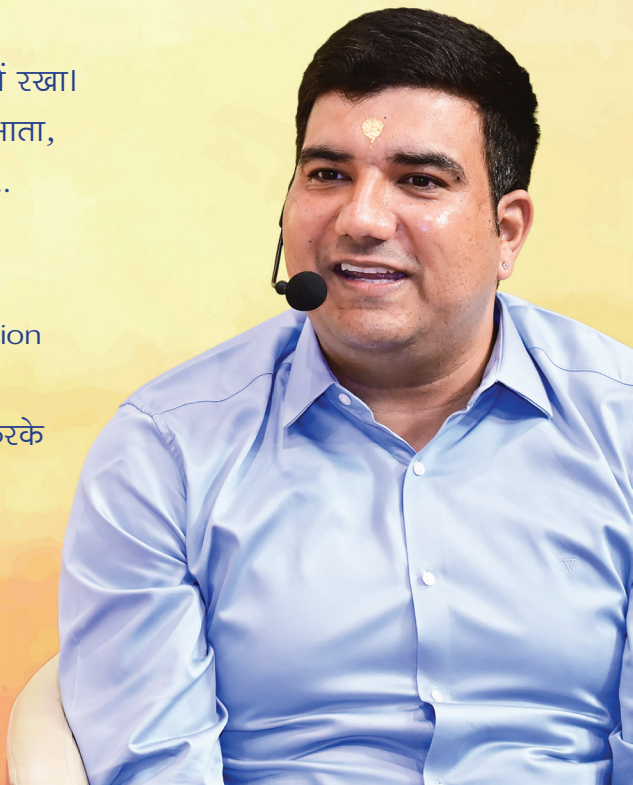

तुम्हें क्या लगता है कि मैं यह मंदिर बनवा नहीं सकता?
मैं चाहूँ तो सात भक्तों के साथ से अभी मंदिर पूरा करवा सकता हूँ
पर इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा। बाकी के हरिभक्तों को इसे पूरा करने की सेवा नहीं मिल पाएगी।
काकाजी के आशीर्वाद हैं कि जो भक्त मंदिर की सेवा करेगा, उसे दुगना फल मिलेगा।
तो मैं सबका फ़ायदा चाहता हूँ...

गुरुजी ने मुझे सिखाया कि हमेशा learning attitude रखना चाहिए।

एक बार मैंने गुरुजी से पूछा कि आप हमेशा कैसे available रहते है? **गुरुजी** ने कहा—

आज के youth को संभाल के रखने के लिए संतों को 24 घंटे available रहना होगा...

New Zealand में जब pilot की पढ़ाई कर रहा था, तो पढ़ाई देखकर घबरा गया था।

पर, गुरुजी का एक ही वाक्य— ***'तू सोच, तू प्लेन उड़ा रहा होगा और मैं पीछे बैठूंगा।'***

उस वाक्य को पकड़कर मैं बढ़ता चला गया और आज सबके सामने हूँ। **21 जनवरी 2008 को गुरुजी ने यह बात कही थी और 1 फरवरी 2020 को मुंबई की flight में बैठ कर साकार भी किया...**

2012, 2017 और 2022 के तीन नाटकों में मुझे पप्पाजी का किरदार निभाने का सौभाग्य मिला। तब एहसास हुआ कि **ये काकाजी-पप्पाजी कितनी बड़ी विभूतियाँ हैं। उन्हें जानना तो अलग बात है, लेकिन उनके जैसे कपड़े पहनने से ही शरीर में एक अलग ही एहसास होता है...**

गुरुजी हमारे लिए 24 घंटे available हैं और उनका जो मेरे साथ रिश्ता है, वैसा ही सभी के साथ एक समान है। हमारे समझने में फर्क़ हो सकता है, वह हमारे thought process की कसर है। उन्होंने अपनी तरफ से कभी कोई कमी नहीं छोड़ी...

दूसरी बात **मैं मंदिर में आकर जो सेवा कर पाता हूँ, उसका credit मेरे बड़े भाई नितिन को भी दूंगा।** वह घर पर सब संभाल लेता है, तो मैं मंदिर आकर सेवा कर पाता हूँ...

अभी जब **गुरुजी** को stent लगाया था, वह समय मैं कभी भूल नहीं सकता। जिस दिन उन्हें discharge मिला और वे गाड़ी में आकर बैठे, तो उन्होंने मुझसे कहा—

जितनी तेज़ हो सकती है, उतनी तेज गाड़ी तू चला। मंदिर में सब मेरी राह देख रहे हैं।

तब मुझे ऐसा लगा कि **गुरु से मिलने की भक्तों को तो क्या बेसब्री होती होगी, जो कि गुरु को अपने भक्तों के पास जाने की बेसब्री हो रही थी...**

भगवान ने 'धुन' की एहमियत मेरे जीवन में कायम रखी है और एहसास कराते हैं कि गुरुजी मेरी उंगली पकड़ कर चला रहे हैं। मैं यह कभी न सोचूं कि मैं तेज़ चलता हूँ, तो उनकी उंगली छुड़ा कर भाग जाऊं। **आज के दौर में बाहर बहुत चमक-दमक है, लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से मैं कभी भटका नहीं, उन्होंने हमेशा संभाल कर रखा...**

- Vipin Yadav
(Delhi)

एक बार earphone share करते हुए मैं और नक्षत्र गाना सुन रहे थे।
नक्षत्र ने कहा इस गाने को गुरुजी से relate करेंगे, तो और भी अच्छा लगेगा।
मुझे उसकी यह बात बहुत अच्छी लगी कि
अगर हम गाना भी सुन रहे हों, तो उसमें भी गुरुजी को याद रखें
या उसे भजन के भाव से सुनें...
नक्षत्र 13 मार्च 2024 को दीक्षा ले रहा था,
तो 11 मार्च को मेरा मन भी भगवान भजने का कर रहा था।
नक्षत्र से इस बारे में बात करने के बाद मैंने 'गुरुजी का अंतर्नाद' video देखी,
उसमें **गुरुजी ने कहा है कि *महाराज ने सब setting कर ली है, बस हिम्मत करके हमें आगे बढ़ना है।***
यह बात मेरे मन में बैठ गई और मैंने गुरुजी को पत्र लिख कर पूछा।
गुरुजी ने कहा— *पापा, दादा से पूछ ले, तो और बढ़िया...*
मैंने दोनों से पूछा और **पूरा परिवार एक ही रात में राज़ी हो गया!**
मैं अपने परिवार को खूब-खूब धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने 'हाँ' कर दी...
13 मार्च को दिनकर अंकल से आशीर्वाद मिला और **जब गुरुजी ने मेरे गाल पर kiss किया,**
तो दिनकर अंकल सहज ही बोले— *गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता मिल गई!*
सभा के बाद **दीदी** ने मेरे नाम का अर्थ समझाया—*सेवक नीरव का मतलब ठंडा।*
फिर मेरी छाती पर हाथ रखते हुए कहा—
हर स्थिति में ठंडा-शांत रहना और
नीरव का एक दूसरा अर्थ 'आनंदी' भी होता है...
अगर किसी की नौकरी Prime Minister नरेन्द्र मोदी के पास लगती है
तो वह गर्व से कहता है कि मेरी नौकरी P.M. मोदी के पास लगी है।
गुरुजी की दया से 'नारायणी सेना' में मुझे entry मिली है
यह ऋण मैं कभी न भूलूँ यह प्रार्थना
और
जैसा कि गुरुजी कहते हैं कि आज ही सत्संग में आया हूँ
यह बात पकड़ कर जियें...
जब मैंने दीक्षा ली, उस दिन को हमेशा याद करके
उमंग-उत्साह से मंदिर में रहूँ...

- Sevak Niravdass

मैं दो-तीन साल का था, तब पापा इतने financial crisis से गुज़र रहे थे कि घर का किराया देने तक के पैसे नहीं थे। तब उन्होंने वापिस गांव जाने का सोचा और दीदी को बताया।

दीदी ने कहा– *अगर आप गांव चले गये, तो गुरुजी से दूर हो जाओगे और बच्चों की पढ़ाई पर भी असर पड़ेगा। गांव में तो शहर जैसी education होती नहीं।*

दीदी ने कहा– अगर किराया देने की बात है, तो हर महीने का किराया मैं set कर दूंगी।

दीदी का इतना कहना ही काफ़ी था और पापा की financial condition भी ठीक हो गई और दीदी से कभी पैसे लेने भी नहीं पड़े। दरअसल, **उनके आशीर्वाद से धीरे-धीरे सब set होता गया। हमने कोई efforts नहीं किये, गुरुजी ने स्वयं हमें अपने से और मंदिर से बांध कर रखा**... दीदी के साथ driving की सेवा में जाना एक सौभाग्य की बात है। उनका ममत्व सहज ही दिखाई देता है।

मेरे पास गुरुजी और दीदी के परिश्रम को appreciate करने के लिये कोई शब्द नहीं हैं... हमें तो गुरुजी को राज़ी करना है, पर देखा जाये तो इस उम्र में भी गुरुजी अपने भक्तों को राज़ी करने में लगे हुए हैं...

अनुष्ठान शिविर की अपनी ही एक महिमा है। इस दौरान गुरुजी हमें पूरे साल का एक divine course देते हैं। **गर्मियों की छुट्टियों में जो भी बच्चे यहाँ रुकने आते हैं, उनके लिए वह golden period होता है। सबके साथ मिलकर रहने का, अपने को improve करने का, सत्संग और गुरुजी से जुड़ने का मौका मिलता है।** अभी जो बच्चे 'स्वामी की बातें' बोलते हैं, उससे उनका confidence level build up होता है। गुरुजी के प्रागट्य दिन पर हम dance करते हैं, तो हमारा stage fear दूर होता है। उसके लिये नित्या दीदी कहती हैं– *हमें कोई competition के लिए नहीं करना, बस गुरुजी और दीदी को राज़ी करने के लिए करना है।*

ऐसे ही अब **'भक्तों का भागवत' में जो हरिभक्त गुरुजी के साथ के अपने प्रसंग बता रहे हैं, वो सुन कर हमें भी याद आता है कि हाँ, गुरुजी ने हमारे जीवन में भी ऐसा किया है। तो हम भी गुरुजी और दीदी की महिमा में खो जाते हैं, उनके साथ की बातें recall हो जाती हैं। गुरुजी ने जो समाज तैयार किया है, उसमें भक्तों का बहुत बड़ा role है।**

मेरी शादी के समय **चेतनभाई, निमित्तभाई, अमित वगैरह** ने जिस तरह सारा काम संभाल लिया, उससे ऐसा लगता था कि जैसे उनके अपने छोटे भाई की शादी हो रही हो। जिस भी काम के बारे में हमने सोचा हो, उससे पहले तो वह काम हो ही गया होता था..

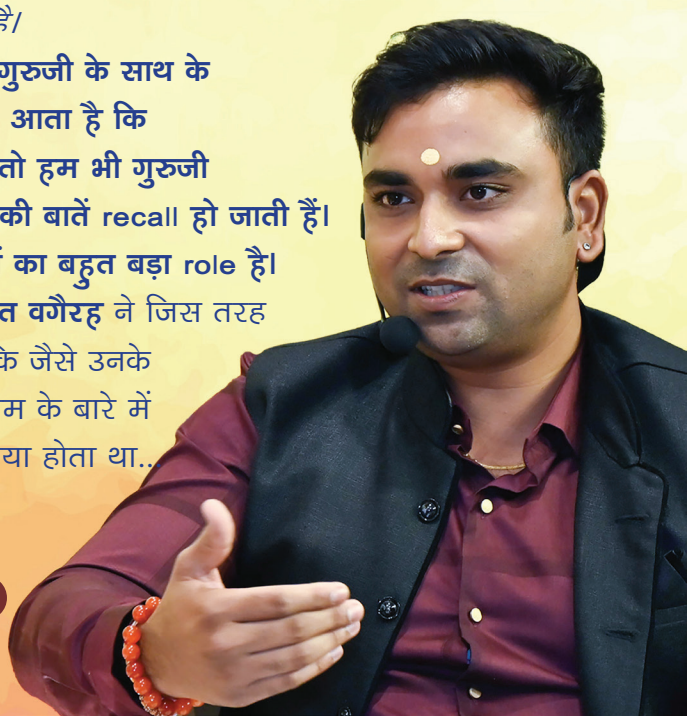

- Jagrat Chouhan
(Delhi)

हमारे पापा (जीतू मोन्डे) जब तीन महीने के थे,
तब योगीजी महाराज ने उन्हें कंठी पहनाई थी...

हम बचपन में सुनते थे कि महाराज थाल ग्रहण करते हैं,
तो, एक बार out of curiosity हमने भी घर पर पर्दा बंद करके थाल गाते हुए भोग लगा कर पर्दा हटाया तो थाल में दाल और चावल दोनों मिक्स किये हुए थे...

2011 (**कीर्तन**) में मेरी तबियत बहुत खराब हो गई थी। गुरुजी ने पापा से कहा कि इसे मंदिर छोड़ दो। उस समय मंदिर का construction चल रहा था, तो गुरुजी कल्पवृक्ष हाल में रहते थे। काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती और गुरुजी के 75वें प्राकट्य दिन की तैयारियाँ खूब ज़ोर-शोर से चल रही थी। **गुरुजी खुद भी बहुत busy थे, लेकिन फिर भी उन्होंने मेरा बहुत ध्यान रखा, ताकि मैं पढ़ाई में पीछे न रह जाऊं। खुद maths के sum समझाते थे और उन्हें check भी करते थे...**

2017 में एक बार दीदी घर आए थे, अभिषेक भैया भी साथ में थे। उन्होंने दीदी को बताया कि मुझे महापूजा के काफ़ी श्लोक याद हैं। तब दीदी ने कहा कि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी की सेवा में मैत्रीस्वामी busy होते हैं, तो तुम महापूजा सीख लो, इससे मैत्रीस्वामी को सहायता हो जाएगी। दीदी ने महापूजा की पुस्तक और वशीभाई की आवाज़ में recorded पूरी महापूजा दी। फिर **मैत्रीस्वामी ने भी सिखाया कि महापूजा के श्लोक ऐसे याद होने चाहिएँ कि रात को हम सो रहे हैं और हमें कोई उठा कर पूछे, तो पूरा श्लोक आना चाहिए...**

2021 अप्रैल में भी हमारा मंदिर रुकना हुआ। तब मंदिर में सबको covid हुआ था, तो ठाकुरजी की सेवा और महापूजा हम करते थे। उस दौरान बहुत अनुभव हुए...

ठाकुरजी की सेवा करते हुए ऐसा लगता था कि मूर्ति नहीं, साक्षात् भगवान की सेवा कर रहे हैं।

गुरुजी भी बहुत ध्यान रखते थे
और
फोन पर पूछते थे कि
हमारी तबीयत ठीक है ना, कुछ हुआ तो नहीं...

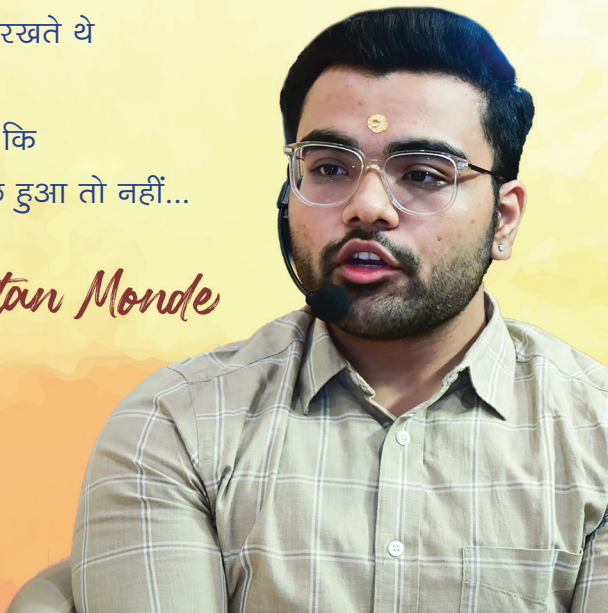

- Shashwat & Kirtan Monde
(Delhi)

भक्तों का भागवत

“

2012 में ‘अर्चिमार्ग की ओर...’ नाटक की rehearsal में काकाजी के स्वधामगमन का scene चल रहा था, तब अचानक मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैंने काकाजी को कभी देखा नहीं, लेकिन समझ नहीं आ रहा था कि मेरे साथ यह क्या हो रहा है? वहीं मौजूद नित्या दीदी से पूछा। उन्होंने कहा – *तू पूर्व का होगा ना, इसलिए ऐसा हो रहा है।*

I think **2012 was the turning point of my life...**

‘सापुतारा’ की शिविर दौरान नक्षत्र घोड़े पर बैठा था और गुरुजी ने उसकी लगाम पकड़ी थी। वह देख कर मैं सोच रहा था कि जैसे गुरुजी ने नक्षु के घोड़े की लगाम अपने हाथ में ले रखी है, वैसे ही **हम सबके जीवन की लगाम का control भी गुरुजी अपने हाथ में रखें...**

दीदी ने एक बार कहा था – *जब हम ख़ुश होते हैं, उस समय भी हमें भजन करना चाहिए ताकि जब हमारे जीवन में मुश्किल समय आये, तो इकट्ठा किया हुआ वह भजन काम आएगा।*

हम बहुत lucky हैं कि गुरुजी ने हमें चुना है...

एक बार गुरुजी से पूछा – *अगर कोई सेवक आपके मुताबिक़ नहीं जीता, तो आपको कैसा लगता है?* तब **गुरुजी** ने कहा – *साधु कभी नाराज़ होते ही नहीं, वे गुस्सा भी नहीं करते और expect भी नहीं करते कि सेवक उनके मुताबिक़ जीवन जिये, पर यदि सेवक वैसा नहीं जी पाता, उसमें नुकसान उसी का होता है...*

2019 की गुरुपूर्णिमा के दिन **गुरुजी** ने एक सूचन किया था – *सेवा अहोभाव से और संत को राज़ी करने के लिए करनी चाहिए।* ***संत को राज़ी करने का राजमार्ग यही है कि उनके संबंध वाले भक्तों के पास दास बन के झुक जाओ। काकाजी को राज़ी करने का यही तरीका है।*** *यदि यह न भी कर पाओ, पर यह बात दिमाग़ में अगर बैठ जाती है, तो भी अपना काम हो जाएगा। इसी सिद्धांत को लेकर मैं चलता हूँ।*

योगीजी महाराज, काकाजी या नमन जैसे छोटे बच्चे क्यों ना हों, सबके प्रति गुरुजी का सेवकभाव बहुत touch करता है... **भक्तों के लिए गुरुजी और दीदी का परिश्रम beyond imagination है।**

मेरे पापा का heart operation हुआ था, तो गुरुजी स्वयं उनको देखने आये थे। दीदी अपनी एक आँख की cataract surgery कराने के बाद जसोला से अपोलो अस्पताल विजय बाबू की तबियत देखने गई थीं। इसी तरह दूसरी आँख की surgery के समय भी पैर की तकलीफ़ के कारण wheelchair पर बैठने के बावजूद वे रेनू बुआ की तबियत देखने के लिये surprise में उनके घर गईं।

अक्षरविहारीस्वामीजी ने बताया था कि साधु के दिल में दो diary होती है – *एक personal और एक general.*

बस, **मेरा नंबर गुरुजी की personal diary में लग जाए, ताकि वे हक़ से मुझे कभी भी, कुछ भी कह सकें।**

- Mohit Garg (Delhi)

भक्तों का भगवत

1978 में हमारा परिवार सत्संग से जुड़ा और **काकाजी, बड़े पापा (राजकुमार शर्माजी) की शादी के लिए मुंबई से दिल्ली ख़ास आए थे...**

फिर1985 में सुहृदस्वामीजी की दीक्षा विधि के समय सभी गुणातीत स्वरूप घर पर आए...

2010 से 2014 तक मैं मंदिर के construction की सेवा में रहा उस दौरान purchasing, communication करना सीखा और पुरी अंकल से accounting सीखी।

मंदिर पर लगा लाल पत्थर बयाना से लाया गया है। शैलेशभाई आचार्य और मैं वहाँ जाकर रहे। **यदि शैलेश मासा नहीं होते, तो पत्थर हमें ढाई गुना महंगा मिलता और समय भी ज़्यादा लगता। वे दिन-रात देखे बिना बस मंदिर के पत्थर के अनुसंधान में रहे। Construction की सेवा के दौरान गुरुजी ने हम सबको एक माला के मनकों की तरह पिरो कर रखा था, वर्ना यह project पूरा करना मुश्किल हो जाता। गुरुजी ने यह भी सिखाया कि सबको साथ लेकर चलेंगे, तो सफलता मिलेगी। मेरा छोटा भाई निष्काम सारी जिम्मेदारियाँ-कारोबार संभालता है, तो मैं मंदिर में सेवा कर पाता हूँ... रसोई की सेवा करते हुए सुहृदस्वामी और हमारे राजुभाई शाह, विनोदभाई, दिलीपभाई शाह, राजकुमार शर्माजी, सुशील भास्करजी, विजयभाई मेहता, अजय चावलाजी वगैरह से बहुत कुछ सीखने को मिला...**

वे ऐसी छोटी-छोटी चीज़ समझाते हैं कि जिससे परेशानी न हो।

गुरुजी से प्रार्थना है कि **सुहृदस्वामीजी को हम निश्चिंत कर दें... गुरुजी की छोटी-छोटी सूचनाएँ हमें जीवन में बहुत कुछ सिखाती हैं...**

गुरुजी ने कहा हुआ है कि बाहर जाते समय साथ में ड्राइवर हो तो उसकी व्यवस्था भी वैसे ही करनी, जैसे बाकी सबकी होती है। **ड्राइवर भी वही खाना खाए, जो हम सब खाते हैं।**

मेरे **पापा (सुरेश शर्माजी) के अक्षरधाम जाने के बाद गुरुजी ने कहा था— *आज से तुम्हारी जिम्मेदारी मेरी!* वह सिर्फ बोला नहीं था गुरुजी ने पल-पल इसका एहसास मुझे ही नहीं मेरे भाई और हमारे बच्चों को भी करा रहे हैं...**

- Shreyash Sharma
(Delhi)

भक्तों का भागवत

गुरुजी ने महिमा से सेवा करना सिखाया कि किसी को अच्छी तरह
थाली में भोजन करना पसंद हो उसे वैसे परोस कर देंगे
तो उसके खुश होने से उसके भीतर
विराजमान ठाकुरजी प्रसन्न हो जाएँगे। गुरुजी के कहने का तात्पर्य यह कि
जिस मुक्त को जैसा पसंद हो, उसी प्रकार यदि उसकी सेवा करेंगे तो साधु राज़ी हो जाएँगे।
गुरुजी ने एक बात और भी सिखाई कि हमें सरल क्यों होना है?
सामने वाला मुक्त मान जाए या झगड़ा न हो इसलिए सरल नहीं होना,
बल्कि हमें सेवकभाव से सरल होना है।
मुक्त में विद्यमान काकाजी को दुःखी नहीं करना, इसलिए सरल होना चाहिए।
प्रसंग तो बनने ही वाले हैं, पर हमें भजन से उसे washout करके ऊपर उठ जाना है
और... किसी से कोई गाँठ नहीं बांधनी।
यह सारा काकाजी का परिवार है, हमें उन्हें साथ देना है।
योगी बापा के परिवार को काकाजी ने संभाला, कितना बलिदान दिया, वे खुद क़ुर्बान हो गए।
हमें वो नज़र में रखना है।
गुरुजी ने यह भी कहा है कि आप सब मिलजुल कर एकता से जितना रहोगे,
उससे मैं ज़्यादा राज़ी रहूँगा और मेरी तबीयत भी अच्छी रहेगी।
किसी भी वजह से हमारी आपसी एकता टूटनी नहीं चाहिए।
यदि एकता टूटती नज़र आए तो उसे
जोड़ने-संभालने के लिए हमें लग पड़ना है, supportive होना है।
बापा और काकाजी का खड़ा किया हुआ परिवार हमें टूटने नहीं देना है।
एकता के साथ-साथ, गुरुजी सुहृदभाव-जोड़ की भी बात करते हैं कि
सुहृदभाव यानि साथी-मुक्त की गलती हो
वह भले ही सहयोग दे या न दे, ऐसा कुछ भी देखे-गिने बिना
स्वरूप को राज़ी करने हेतु मिलजुल कर काम करना है...
गुरुजी ने कभी भी हमारी गलतियों को देखा ही नहीं
उन्होंने हमेशा ऐसा माना है कि
सब काकाजी के भेजे हुए मुक्त हैं, मुझे उनकी सेवा करनी है।
सो, उनकी गलतियों को देखने का अधिकार ही नहीं...

- Sevak Abhishek

भक्तों का भगवत

2003 में गुरुजी पंजाब आए थे, तब पहली बार उनके दर्शन हुए।
सत्संग सभा attend करने के बाद हमें हुआ कि कंठी लेनी है
तो मैंने और पापा ने कंठी ली...

2009-10 की बात है, झांझी साहब मंदिर के लिये सेवा में चावल भेजते थे।
गुरुजी अकसर मुझे ही चावल दिल्ली लेकर आने के लिये कहते थे।
एक बार मंदिर आते हुए मेरे मन में negativity आई कि
हर बार मैं ही क्यों देने के लिये आऊँ? यह सोचते हुए रात को दो-तीन बजे मंदिर पहुँचा।
तब construction के कारण गुरुजी ऊपर 'कल्पवृक्ष' हॉल में रहते थे।
गुरुजी के पास आकर मैं बैठा ही था कि वे बोले—

तू तो अपने मंदिर का ही लड़का है, तुझे कुछ समझाने की ज़रूरत है?

यूँ गुरुजी ने अंतर्यामी रूप से मेरे मन की बात जान ली और negativity दूर कर दी।

पापा को helpful होने के लिये मैंने पढ़ाई छोड़ दी थी। फिर 2008 में पढ़ाई पूरी करने की सोची।
जिस दिन पेपर था, उसी दिन पापा slip हो गए। मैंने **दीदी** को फोन किया, तो उन्होंने कहा कि
मैं धुन करूंगी, तू भी धुन करके पेपर दे दे।
मेरा result आया, तो मेरे आगे-पीछे वाले सब fail हुए और मैं अच्छे marks से पास हो गया...

घरवालों के साथ मैं लड़की देखने गया था
तभी पसंद आने पर चुनरी ओढ़ा कर सोनम को सादगी से साथ ले आए।
यह बात गुरुजी को पता चली, तो वे बहुत राज़ी हुए कि
बहुत अच्छा किया, शादी ऐसे सादगी से ही होनी चाहिए।

गुरुजी कहते हैं न कि अगर तुम नहीं जियोगे
तो next generation करके दिखाएगी।

तो, हमारे बच्चों को देखकर ऐसा ही लगता है।
गुरुजी ने कहा है कि *तीन मिनट धुन करके सोना...*

मेरा बेटा 'नियम' रोज़ रात को
तीन मिनट धुन करके ही सोता है...
गुरुजी बच्चों को ऐसे संस्कार दे रहे हैं...

-Anil Wadhwa
(Jagraon)

मेरा जब जन्म हुआ, तब मेरे ताऊजी मुंबई में काकाजी की सभा में बैठे थे।
काकाजी ने उन्हें बुला कर एक फूल दिया कि
खुश हो जाइए, आपके घर में खुशी आई है।
जबकि तब तो फोन इत्यादि के इतने साधन नहीं थे।
ताऊजी जब घर वापिस आए, तो उन्हें पता चला कि जब काकाजी ने उन्हें फूल दिया उसी समय मेरा जन्म हुआ था। मैं 13 दिन का था, तब काकाजी, गुरुजी, कांतिकाका और दीदीमां सबद्दी हमारे घर पर आए थे।
मेरे पापा पेड़े का प्रसाद ले आए थे। तब लोग ज़्यादा थे, तो पापा को ऐसा लगा कि प्रसाद कम न पड़ जाए। लेकिन, काकाजी ने खुद प्रसाद बांटना शुरु कर दिया और वह प्रसाद कम होने के बजाय बढ़ गया...
एक बार सभा में **गुरुजी** ने बात की—
स्वामिनारायण संप्रदाय में प्रभुधारक संत की परंपरा चलती रही है और हमेशा चलेगी।
यह बात मुझे हज़म नहीं हुई और ऐसा विचार आया कि सब भक्त लोगों को इकट्ठा करने ऐसी बातें करते हैं। तभी **गुरुजी** बोले कि ***ये बातें काल्पनिक नहीं हैं और ज़बरदस्ती आपके भेजे में डालने के लिए नहीं कह रहा। मुझे आपको misguide करके क्या मिलेगा?***
उसी समय मुझे दूसरा विचार आया कि यहाँ ज़्यादा लोगों से पैसे इकट्ठे होने पर पता नहीं उस पैसे को कैसे use करते होंगे?
तभी गुरुजी ने एक प्रसंग सुनाया कि गुणातीतानंदस्वामीजी ने मंदिर से पैसे देकर किसी हरिभक्त की पैसों से मदद की थी। तो, वो negative बात भी गुरुजी ने मन में से निकाल दी।
गुरुजी की अपनी कोई privacy नहीं, उनका जीवन खुली किताब जैसा है।
गुरुजी ने एक बार बताया कि वे जब संत बने थे,
तब उनके **गुरु योगीजी महाराज ने उनसे कहा था कि**
तुम कमरे में नहीं सोना, बाहर सब के बीच हॉल में सोना।
आज गुरुजी 87 साल के हैं,
लेकिन योगीजी महाराज की बात follow कर रहे हैं।
गुरुजी ने खुद जीकर सिखाया है कि
गुरु की छोटी से छोटी आज्ञा माननी चाहिए।

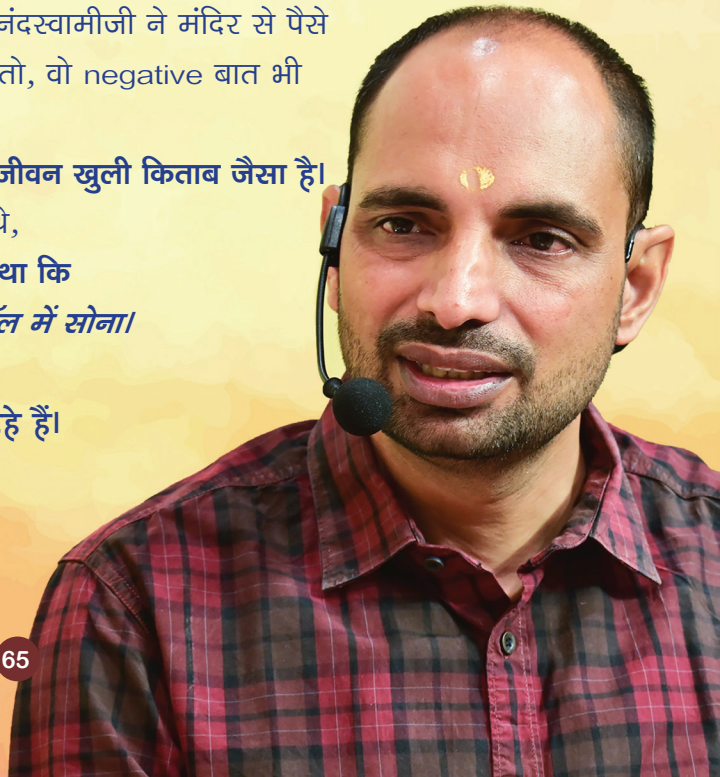

-Chetan Bhargav
(Sowaddi Kalan)

भक्तों का भगवत

मेरे parents का मुझे support नहीं था।
उन्हें हमारा मंदिर जाना भी पंसद नहीं था।
Business के लिए fund चाहिए था, कहीं से बंदोबस्त नहीं हो पाया।
मैंने गुरुजी से बात की, तो उन्होंने 5 मिनट के अंदर ही fund arrange कर दिया
और... बाद में Business expand करने के लिये भी उन्होंने पैसे दिए।
उन्होंने एक बार भी ऐसा नहीं पूछा कि पैसे कब वापिस करोगे?
...मुझे, मेरी पत्नी अनीता और बेटे रूपीत को food poisoning हो गया था।
तब मंदिर में फोन करके गुरुजी को बताया, तो उन्होंने तीनों समय खाना भिजवाया।
मेरे parents gate पर ताला लगा कर रखते थे, सो मंदिर के सेवक gate टाप कर भोजन देने आते थे।
महाराज ने ऐसे incidences खड़े किये कि मंदिर से हमारी नज़दीकियाँ बढ़ती गईं।
गुरुजी ने आपस में मिलजुल कर जीने की भावना जगा कर जो दिव्य कुटुंब गुरुजी ने बनाया है...
कई बार अनीता को तो घर में बैठे-बैठे गुरुजी की हाज़िरी का एहसास होता।
एक बार गुरुजी ने अनीता को कहलवाया कि तीन-चार दिन तक
अपने घर मुखर्जी नगर से पैदल चल कर मंदिर आना। जितने लोग रास्ते में अनीता का दर्शन करेंगे
उन सबका कल्याण होगा... अनीता जब घर से निकलती, तो तेज़ धूप होती।
लेकिन थोड़ी दूर चलने पर ही बादल और ठंडी हवा चलने लगती...
कुछ परेशानी आने पर **गुरुजी** ने अनीता को fixed time धुन करने के लिए कहा। साथ ही कहा कि
इसके बहुत पुण्य हैं, पिछले जन्म से यह काकाजी की लड़की है, प्रभु उसे सब कुछ देंगे।
गुरुजी के वचन से भजन किया,
तो थोड़े दिनों में situation favourable हो गई...

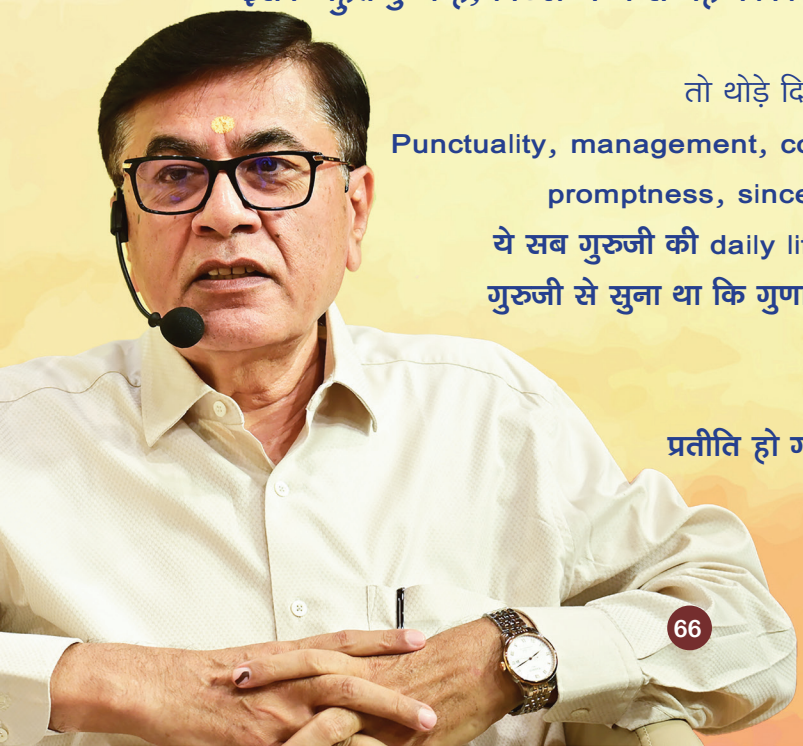

Punctuality, management, communication, advance planning
promptness, sincerity, honesty, time management
ये सब गुरुजी की daily life style में देखा और उनसे सीखा है...
गुरुजी से सुना था कि गुणातीत संत के शरीर से rays निकलते हैं।
एक बार मैं गुरुजी के पैर दबाने लगा
तो मुझे ज़ोर का झटका लगा।
प्रतीति हो गई कि गुरुजी द्वारा प्रभु कार्य करते हैं...

-Anuj Durejaji
(Delhi)

2005 में मैं अपनी पत्नी भूमिका और बेटी खुशी के साथ पहली बार मंदिर आया था। **भूमिका और मुझे मंदिर के गेट में enter होते ही सुकून मिला। भूमिका ने कहा कि यहाँ मन के भाव बदल जाते हैं, शांति मिलती है। ऐसा लगता है कि जैसे अपने ही घर पर आए हों...**

2008 में मुझे गुरुजी के प्राकट्य दिन पर आना था, मैंने गुरुजी से पूछा—*मैं आ जाऊं?* गुरुजी बोले—*मैं टिकट भेज दूँ?* मैंने कहा कि आपने कह दिया है, तो इंतजाम हो जाएगा। मैं प्राकट्य दिन मना कर वापिस विद्यानगर गया, तो मेरी टिकट का जितना fare था उतना मेरा increment हो गया था, जो आज तक होता आ रहा है...

2012 के उत्सव में मैं सेवा के लिये आया था, तब सबके साथ मेरी नज़दीकियाँ बढ़ीं। सबको जानने का मौका मिला और ऐसा ही लगा कि मैं मेरे घर में ही आया हूँ...

2017 के उत्सव के लिये मैंने गुरुजी से पूछा—*मैं कितने दिन सेवा के लिए आऊं?*

गुरुजी ने कहा—*तीन दिन का उत्सव है, तो पहले 5 दिन और बाद में 5 दिन के हिसाब से 15 दिन के लिए आ जाना।*

तब **Job से 15 दिन के लिए छुट्टी मिलना impossible था। फिर भी मैंने अपने boss से बात करी तो, उन्होंने खुशी-खुशी 'हाँ' कर दी। वह तो मेरे लिए एक miracle था...**

मेरी बेटी खुशी को पढ़ाने के लिए foreign भेजना था। तब **दीदी** ने मुझसे कहा था—*foreign भेजने से पहले एक महीना उसे अक्षरज्योति भेज दो। यहाँ जो संस्कारों का सिंचन होगा, वो वहां पर भी याद करेगी।*

आज खुशी कोई भी बात पहले दीदी को, डॉ. अर्ची को और फिर मुझे करती है...

खुशी को पढ़ाई के लिए भेजते समय गुरुजी ने मुझसे पूछा था—

Fees वगैरह की अरेंजमेंट हो गई है? मैं यहाँ से भेज दूं?

तो, कभी भी fees वगैरह के बारे कोई दिक्कत नहीं आई।

सारा इंतजाम प्रभु ने कैसे कर दिया, वो पता ही नहीं चला।

6 साल से खुशी पढ़ाई करने के लिए बाहर गई है।

इस दौरान भूमिका को अकेलापन न लगे

तो, माँ की तरह दीदी ने उसका ख्याल रखा है...

-Nimeshbhai Shah

(Vallabh Vidhyanagar)

भक्तों का भागवत

❖ जब मंदिर बन रहा था, तो उसके Slab में गुरुजी ने
हर एक हरिभक्त से मसाले का एक-एक तसला
इस भावना से डलवाया था कि यह मंदिर हमारा है,
गुरुजी की वही रीति आज भी जारी है। गुरुजी की मूर्ति का क्ले मॉडल बन रहा था
तब भी हर भगत से मिट्टी लगवाई थी और अपनेपन की भावना उसके अंदर जड़ दी...

❖ मैं छोटा था तो body पर white spots हुए थे। गुरुजी ने मोगरी में काकाजी की समाधि की हज़ार परिक्रमा करने के लिये कहा। एक साल से जो दाग़ ठीक नहीं हो रहे थे, वह दो महीने में ठीक हो गये और जब परिक्रमा करके लौटे, तो गुरुजी के अंगूठे पर white spot हुआ था...

❖ मेरे दादा हसमुखभाई जब अक्षरनिवासी हुए, तो घर पर गुरुजी उन्हें कंठी-हार पहनाने आये और शमशान घाट भी गए।
गुरुजी कोई चीज़ क्यों करते हैं, हमारी बुद्धि वहाँ तक नहीं पहुँच सकती। पर, ऐसे संत सिर्फ संबंध देख कर सौ माँ से अधिक प्यार करते हैं...

❖ 2022 में मुझे lever की problem हुई थी, तब साकेत में दासस्वामीजी को
Max Hospital में मिल कर गुरुजी at the age of 85
तीन घंटे का सफ़र करके रात के दस बजे मेरे घर कुंडली आये...
24/7 गुरुजी के पास कोई भी जा सकता है, बात कर सकता है।

❖ मेरा lever transplant हुआ, तो 14 दिन में मैं घर आ गया।
डॉक्टर ने कहा आप तो record बना कर जा रहे हो।
पर, उन्हें क्या बतायें कि मेरे पीछे हाथ किसका है!
सच, गुरुजी मिले, ऐसा समाज मिला है
तो, भक्तों की महिमा हमेशा होनी चाहिए...

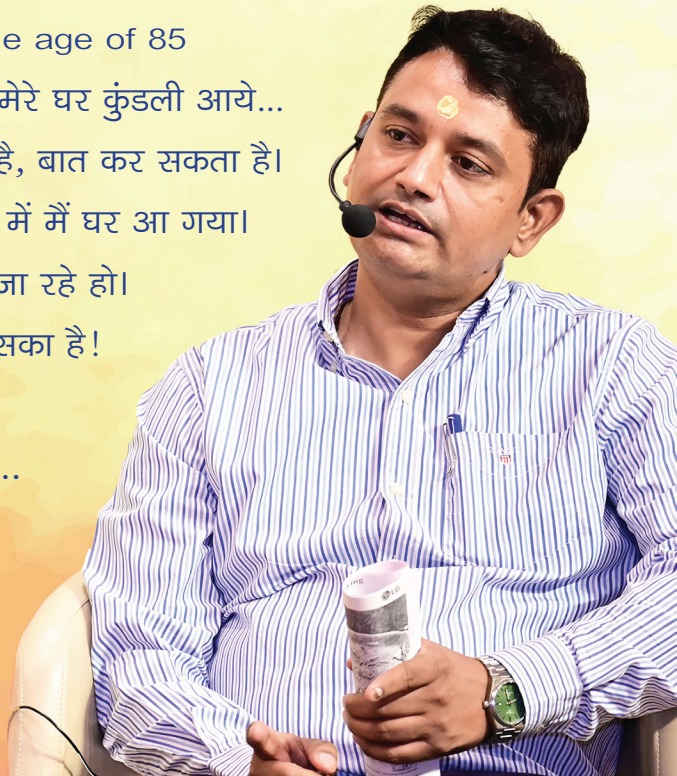

- *Pranav Jani*
(Sonipat)

गुरुजी के रूप में काकाजी के दर्शन बहुत बार किये हैं।

हमने कोई परिश्रम नहीं किया है,

गुरुजी ने ही प्यार-मोहब्बत से पकड़-खींच कर अपने साथ जोड़ा है।

उन्होंने बताया— ***निष्ठा पक्की होगी, तो बाकी सब साथ में आ जाएगा।***

उन्होंने पल-पल काकाजी को कैसे आगे रखा है, वह हमारे लिए अनुकरणीय है,

वे हमारे लिए ही ऐसा जीते हैं। गुरुजी ने बताया था—

हर एक चीज़ को check, re-check and verify करोगे,

तो वह काम काकाजी की सेवा कही जाएगी।

हमें मूर्तियों के कारण यहाँ शांति लगती है

पर उन्हें धारे हुए संत-गुरुजी भी यहां विराजमान हैं, इसलिए शांति लगती है...

गुरुजी हर एक family के केंद्र में हैं

हर एक से अलग-अलग रिश्ता है और सबकी प्रगति करा रहे हैं।

Without any commercial activity

काकाजी के सिद्धांत के हिसाब से इतना बड़ा मंदिर बनाना

और

सबको संभालना बहुत बड़ी बात है।

हर एक केंद्र के साथ सर्वदेशीयता के संबंध से

सबको एक करने का कार्य गुरुजी कर रहे हैं

यह कोई साधारण संत या साधारण साधु कर ही नहीं सकते।

जिनमें प्रभु सांगोपांग अखंड हैं, वे ही कर सकते हैं...

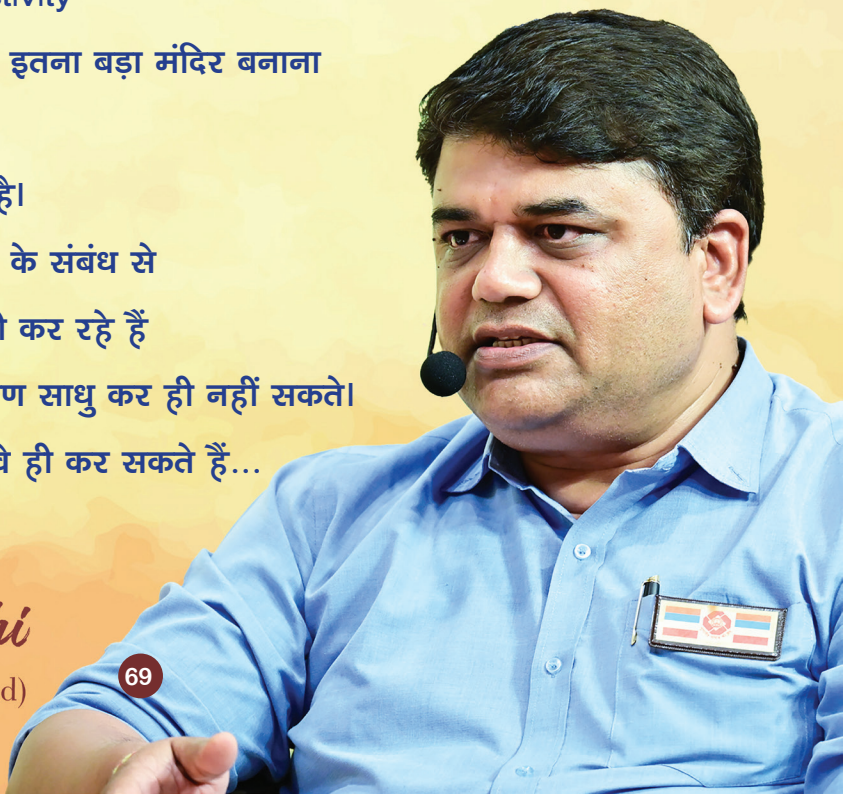

-Pareshbhai Doshi
(Ahmedabad)

गुरुजी की छत्रछाया में भगवान भजते हुए
मैंने तीन सूत्र पकड़े हैं—
भगतजी महाराज का सूत्र—
गुरु गुणातीत के लिए मेरा देह कुर्बान है...
योगीजी महाराज का सूत्र—
भगवान के भक्तों की सेवा ही मेरा जीवन...
गुरुजी जो कहें वह करना, उनके वचनानुसार ही सब करना है।
गुरुजी ने A-103 से कसनी में सेवा-भक्ति करने की जो training दी
उसी की बदौलत आज हम उनके पास सेवा करने के क़ाबिल बने हैं
यह उनकी कृपा है।
भक्तों ने गुरुजी का बहुत साथ दिया है
तो गुरुजी ने भी उनके लिये न दिन देखा न रात,
न ही अपनी देह की परवाह की।
भक्तों की सेवा के लिये कुछ भी नहीं देखा
कोई reservation नहीं रखा।
गुरुजी ने मंदिर के लिए, हम सबके लिये
जो अपना खून-पसीना बहाया है
उसकी बदौलत ही सब खुशहाल हैं...

- Sadhu Suhradswaroopdāssji

व्रतोत्सवसूची

(1) दि.1.10.'24, मंगलवार— प.पू. दिनकर अंकल का 80वाँ प्राकट्य दिन
(गुजरात-सूरत की पवित्र भूमि पर 19-20 अक्तुबर
दो दिन हर्षोल्लास से मनाएँगे।)

(2) दि.3.10.'24, गुरुवार — नवरात्रे प्रारंभ

(3) दि.12.10.'24, शनिवार — दशहरा
ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का पार्षदी दीक्षा दिन
पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी की 60वीं जन्म तिथि

(4) दि.14.10.'24, सोमवार — एकादशी, व्रत
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की अंतर्धान तिथि

(5) दि.16.10.'24, बुधवार — शरद पूर्णिमा
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन
ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकर अंकल की 80वीं प्राकट्य तिथि

(6) दि.28.10.'24, सोमवार — एकादशी, व्रत—वाघ बारस

(7) दि.29.10.'24, मंगलवार — धनत्रयोदशी

(8) दि.30.10.'24, बुधवार — अक्षरचौदस

(9) दि.31.10.'24, गुरुवार — दीपावली

(10) दि.2.11.'24, शनिवार — अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ

(11) दि.3.11.'24, रविवार — भैया दूज

(12) दि.6.11.'24, बुधवार — लाभपंचमी

(13) दि.9.11.'24, शनिवार — 'दिव्य प्रकाश पर्व' के रूप में
दि.10.11.'24, रविवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का 108वाँ प्राकट्य दिन
वल्लभ विद्यानगर-गुणातीत ज्योत में
सभी गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में मनाया जाएगा।

(14) दि.12.11.'24, मंगलवार — प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

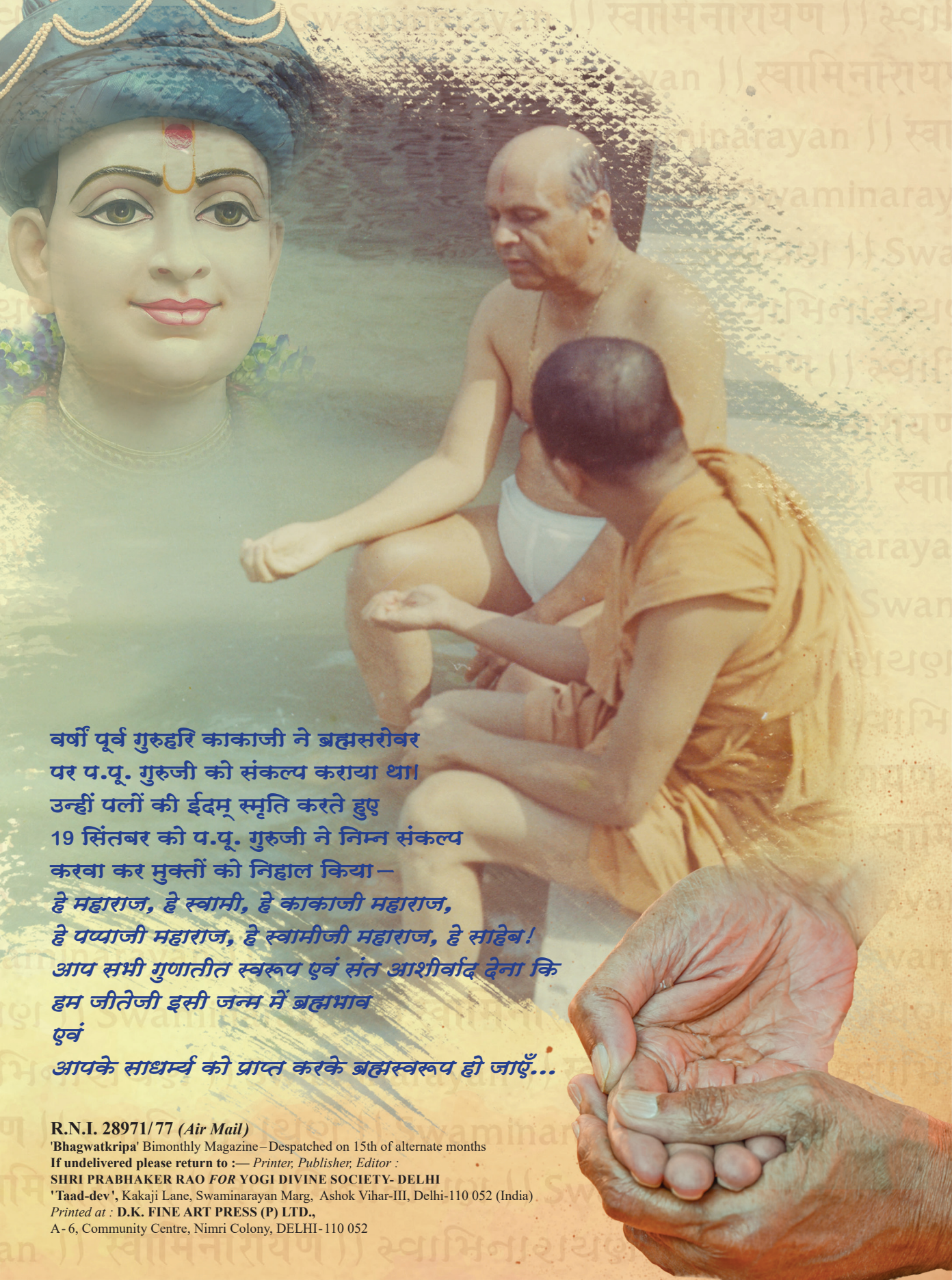

वर्षों पूर्व गुरुहरि काकाजी ने ब्रह्मसरोवर
पर प.पू. गुरुजी को संकल्प कराया था।
उन्हीं पलों की ईदम् स्मृति करते हुए
19 सिंतबर को प.पू. गुरुजी ने निम्न संकल्प
करवा कर मुक्तों को निहाल किया –

हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी महाराज,
हे पप्पाजी महाराज, हे स्वामीजी महाराज, हे साहेब!
आप सभी गुणातीत स्वरूप एवं संत आशीर्वाद देना कि
हम जीतेजी इसी जन्म में ब्रह्मभाव
एवं
आपके साधर्म्य को प्राप्त करके ब्रह्मस्वरूप हो जाएँ...

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :*
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,**
A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052